यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
हिंदिया प्रकाशन दिल्ली

हिन्दी टाइम्स के यशस्वी सम्पादक
श्री नरोत्तम नागर
को सादर

मैं इतना ही कहूंगा

बरफ की समाधि मेरा तीसरा कहानी सग्रह है। इसके पहले मेरे दो कहानी-सग्रह विश्वामित्र की खोज' व नेत्रदान' प्रकाशित हो चुके हैं।

कहानी लिखने के बारे में मेरा अपना मत है कि वह किसी भी शली व हप्टि विशेष से लिखी जाय पर उसका उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। मैं समझता हूँ कि मेरे अन्य सग्रहों की तरह यह सग्रह भी पाठकों लेखकों व आलोचकों को भायेगा।

इस सग्रह के प्रकाशन पर मैं भाई प्रेमगोपाल मेहरा को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसे प्रकाशित करने में देर जरूर की पर अन्धेर नहीं किया।

साले की होली
बीकानेर

यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र'

अनुक्रमणिका

एक ऐसा देश चाहिए

हमें तो एक एसे देश की जरूरत है जो
मजलूमों की जिन्दगी का ठेका लेता है,
जहाँ इन्सानियत धर्म है, जहाँ इन्सान
आसमान को नहीं जमीन को मुहब्बत
अनुभव करता है दुख सुख समझता है।

दो तरुण हृदयी नवयुवकों के नालदार जूते उनमें से दो मजहबी अन्धप
को लेकर और दो हृदय की प्रतिहिंसा को लेकर एक साथ खट-खट की आवा
स पहाड़ी घाटी में गूंज उठे।

काश्मीर की सुन्दर और हृदयाकर्षक पर्वतमालाओं की सुरम्य घाटी
वे दोनो एक दूसरे पर घात प्रतिघात करने की सोच रहे थे। बिखरे हुए पर
पर उनके फौजी जूते एक विचित्र आवाज कर रहे थे। चतुर्दिक शून्य सारवर
थी। केवल हर डग के साथ उठती हुई धीमी आवाज ऊँची-ऊँची घाटियों
प्रतिध्वनित होकर शान्त हो जाती थी।

श्रौर व दोनो—

आगे एक भी कदम बढाया तो गोली मार दूगा।

श्रौर तुमने गोली मारने की कोशिश की तो ऊपर वाली यह चट्टान मैं तुम्हारे सर पर फेंक दूगा। जसे खड़े हो वसे ही खड़े रहना हिलने डुलने की बेजा कोशिश मत करना।

श्रौर वह पहला सिपाही श्रागे बढ़ा। संगीन उसके हाथों मे तनी हुई थी श्रौर श्राँखें उस दूसरे सिपाही की बन्दूक के घोड़े पर केन्द्रित थी। एकाएक दूसरे ने अपने सिर की टोपी को जरा नीची करके दाए हाथ से अपनी कटार निकाल कर पहले सिपाही के ऊपर फेंकी वह घबरा उठा श्रौर जब तक पहला सिपाही सभले दूसरे सिपाही ने एक गोली उसकी छाती मे दाग दी। पहला सिपाही वहीं श्रचेत होकर गिर पड़ा। दूसरा सिपाही सात्विक एवं पशाचिक श्रट्टहास कर उठा जिसमे हैवानियत चीखें मार रही थी श्रौर वह अपनी सगीन का बेपर वाही से हिलाता हुआ बोला—'भाड़े के टट्टू कितने दिन तक लड़ेगे साला श्रागे बढ रहा था'—श्रौर उसने एक जोर की लात उस पड़े हुए सिपाही को मारी—'बेवकूफ ! सादिक का सामना करने चला था जानता नही सादिक अपने मजहब के लिए अपने शरीर का एक-एक कतरा बहा सकता है।—श्रौर सादिक उसके पास बठ गया। जब से बीडी निकाली मगर माचिस न मिलने के कारण उसने साबिर की जब सम्भालनी शुरू की। साबिर की जेब में एक बटुआ श्रौर कुछ गड़बड़ सामान निकला। पहले सादिक ने बीड़ी सुलगाई श्रौर उसका लम्बा कश खीचते हुए बोला— हिन्दुस्तान पाकिस्तान के सिपाहियो को क्या समझता है ? वह जानता है कि हम सोये पड होंगे श्रौर हम उन्हें इस श्रवस्था मे गिरफ्तार कर लेंगे। श्रौर इसके बाद सादिक ने बटुआ खोला। बीडी के कश लगातार खीच जा रहा था। बटुवे म पस थे श्रौर

सादिक की श्राँखें फटी की फटी रह गई। माथा मुह खुला रह गया श्रौर बीड़ी हाथों से गिर कर वहाँ के गिरे पत्तों म सुलगने लगी। कुछ पल के बाद वह हकलाता हुआ बोला— साबिर !"""""साबिर' श्रौर उसने फौरन साबिर के कुन्तल श्रावेष्टित चेहरे को देखा जिस पर एक बड़ा भयानक

घाव का निशान था। गाल से लेकर आँख तक हाफ इंच की खाई-सी पड़ गई थी। सादिक पानी की बतली निकाल कर उसके मुंह पर पानी छिड़कने लगा। साबिर के अचेत मन को कुछ चेतना आई। उसने अपना मुंह खोला सादिक ने उसे पानी पिलाया और साबिर तड़पने लगा—बिना पानी की मछली की तरह—ओह दम घुट रहा है तुम कौन हो?—साबिर की आँखें फट गई।

तुमने मुझे पहचाना नहीं साबिर? —स्वर में आत्मीयता थी! मैं सादिक हूं।

'तुम तुम। उसके स्वर में पीड़ा थी।

'हां, हां मैं ···मैं ···? —सादिक के स्वर में प्रगाढ़ वेदना थी जो धीरे-धीरे आँखों में छा रही थी।

तुम सादिक।

हां साबिर?

'पाकिस्तान का अवाम" सिपाही जागरूक पहरेदार ओह!—और वह छाती पर हाथ रख कर कुछ देर के लिए खामोश हो गया। फिर बोला—तुम्हारे दिल में जो थी वह आज तुमने पूरी करली भाई। एक रोज तुमने कहा था न तुम गद्दार हो मजहब के दुश्मन हो मैं तुम्हें तलवार के घाट उतारूंगा और आज तुम्हें जन्नत बख्शने वाले खुदा ने तुम्हारी इल्तिजा सुनली। तलवार से नहीं गोली से तुमने मार दिया। सादिक! उसका स्वर कठोर हो उठा और उसकी आँखों में भयंकरता नगा नाच कर उठी—'उस रोज तुमने मुझे शैतान की आवाज में कहा था—'या तो तुम अपनी पिस्तौल काफिरों को मारने के लिए दे दो वरना मैं तुम्हारा खून पी जाऊँगा लो।

'साबिर'—आँखें छलछला आयी सादिक की।

'लो पीओ अपने भाई का खून'—और उसने अपने कलेजे पर लगे खून से लथपथ हाथ सादिक के चेहरे पर दे मारा और पिशाच की तरह चीख कर बोला—भाईजान! खुदा तुम पर मेहरबान होगा। मजहब तुम्हें अपना रहबर बनायेगा। दुनियाँ की जबान पर तुम्हारा प्यार भरा नाम रहेगा कि सादिक

मे अपने मजहब और मादरे-वतन क लिए अपने भाई को ही इसान से शैतान बनाया। यह उसी समय का दाग है जब तुमने गुलशन को भेजा था कि उसक पास से पिस्तौल लाओ और मेरे इन्कार करने पर उसने यह छुरा भोंका था जिसने मेर चेहरे को इतना खौफनाक बना डाला कि मरी बीवी भी मुझे छोड कर भाग गई। तुम्हारी वह भोली भाली भाभी जिस पर तुम्ह आज या मेरे इस खौफनाक चेहरे को देखकर घबराकर भाग गई और न जाने आज वह किस हालत म होगी ?

सादिक का कलेजा भर आया। अब उसम वह हिम्मत न थी कि साबिर क दिल म निकले अल्फाज क शोला को सम्न करता। आवाज म अपने शरीर की सारी ताकत लगाता हुआ बोला— साबिर ! चलो ! मैं तुम्ह अस्पताल से चलू ।

'अस्पताल स चलोगे ? उसने अपनी आवाज म व्यग का मिश्रण करते हुए कहा— कहीं तुम्हारे आका नाराज न हो जायेंगे। लोग तुम्हें गद्दार नहीं कहेंगे ? सादिक ! भाई की मुहब्बत तुम्ह बुजदिल बना रही है। सादिक भाई की मुहब्बत क पीछे अपन फज को मत भूलो और यह भी याद रखो कि मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ और है एक हिन्दुस्तानी सिपाही। गोली की पीड़ा आँखों में छाने लगी। साबिर पीड़ा स बेचैन हो गया। स्वर टूटने लगा। वह एक पनी नजर से सादिक को घूरता रहा और फिर बेहोश हो गया। सादिक का स्नेह भाई की इस हालत पर उमड पड़ा। सादिक क चेहरे का वह भयानक दाग जिसको देखते ही आदमी की आत्मा काप उठती थी तन-बदन सिहर जाता था और इन्सान की बबरता मालूम हो जाती थी उसे देख कर वह करुणा स भर आया। धम की सच्ची और नगी तस्वीर आज उसने देखली। और आज ही उसन देखी *एक पीडित आत्मा का पागलपन* जो *सत्य की भित्ति पर* आधारित था वह तड़प उठा।

साबिर क हृदय में प्यार ममता स्नेह सब कुछ लुप्त हो चुका था। उसक हृदय में बस एक ही लगन की भयकर ज्वाला जल रही थी कि यदि वह मांसाहारीजानवर होता तो इन्सान क रूप मे खड़े इस बहशी को नोच-नोच

न र चला जाता जिसन उसको बदसूरत बनाया बीवी और दो मासूम बच्चों स बिछड़ाया।

सादिक न अपनी बलिष्ठ भुजाओं मे साबिर को उठाया और पाकिस्तान की सीमा की ओर बढा। साबिर चेतना लुप्त था और सादिक"""

विचारों म उलझा, अतीत की घटनाओं मे अपन आपको विस्मृत किये बढ़ रहा था—एक अंधे भिखारी की तरह जो यह नही देख सकता कि आगे पत्थर है जिसकी ठोकर लग जाने से वह गिर जाएगा। वह पुरानी याद म खोया हुआ था—

अब्बाजान ! यह नही हो सकता क्योकि इन दोनो म पाक मुहब्बत है। यदि आप इन दोनों की शादी नही करेंगे तो आप इन्साफ का गला घोंट देंगे और इन दोनों की बर्बाद जवानियों क साथ आप मुझे भी खो बठेंगे'—सादिका न भावुकता से ओत प्रोत होकर कहा था क्योकि भावुकता उसकी जन्म की सहेली थी।

और उधर

दुनियाँ मुझ पर हँसे थूक, राये मह मैं न तो सहन कर सकती हूँ और न करूंगी। मैं साबिर से शादी करूंगी चाहे अब्बाजान आप मेरी बरात म आय या नही मैं अपन अरमानों का गला घोटन को कभी भी तयार नहीं हू। मलिका न गर्जकर कहा था जसे उसकी आत्मा में प्रशात आत्मबल आगया हो।

फिर शहनाई बजी। बारात चली दो तीव्र उत्कठित हृदयों का पहला भौतिक मिलन कराने। फूल हँसे थे और वातावरण में उस दिन यौवन नये मधुर की तरह फूटने लगा था। कसी मस्ती थी साबिर क दिल म।

और दो चहचहाते मक्खन स मुलायम बरफ स सफेद और पवत मालाओं की चंचल लहरो म खोल नन्हें-नन्हे कितने प्यारे थे—वो दोनो बच्चे; साबिर क।

और बाद म—

'पाकिस्तान लेना हर मुसलमान का फज है और अपन फज और मुल्क के

लिए जो इन्सान अपनी जान निछावर करता है उसे परवर दिगार जन्नत और हूरें नसीब कराता है। आज हमारा इस्लाम खतरे में है। हिन्दुओं का, उन काफिरों को अपने वतन का फख्र है। उन्हें इस बात का गरूर है कि हम हिन्दू ही हिन्दोस्तान के चाँद और सूरज हैं। फिर तुम्हें यह क्या न गरूर हो कि हम मादरे वतन पाकिस्तान और इस्लाम के चाँद और सूरज हैं। इस्लाम के सच्चे खिदमतगारों कौम के बहादुरो महमूद गजनवी चंगेजखाँ तमूरलंग और खुदाये अकबर के जमाने को याद करो और सोचो—तुम्हारे बुजुर्गों ने काफिरों पर हुकूमत की या तलुवे सहलाये और तुम बेजान मुर्दों की तरह पड़े हो।—और मौलवी साहब का तन बदन काँपने लगा। आवाज फट गई। आँखें लाल हो गई और शरीर पसीना-पसीना हो गया। सब लोग चिल्ला उठे—'हमारे जिस्म का एक-एक कतरा अपने मजहब और पाकिस्तान के लिए बहेगा— और सान्कि ने भी प्रतिज्ञा की थी।

फिर ?

फिर अंग्रेजी और हैवानियत का वह तूफान आया जिस का मैं बयान नहीं कर सकता।

भाई जान ! मुझे आप सब पर यकीन है कि आप खून का बदला खून से लेंगे। यह कहा था उस अमीरजादे ने जिसने धर्म और देश के नाम पर करोड़ों की दौलत जमा की। गरीबों के खून से होली खेलकर उसने अपने घर में दीवाली के सुघड़-सलोने दीप जलाये थे। तभी तो वह कह रहा था—'चोर निशाने पर बठा।

और ....

सादिक ने दुश्मनों से गिन गिन कर बदला लिया। उसने वे कारनामे दिखाए थे कि शैतान भी देख कर रो पड़ा—बबरता नृशंसता और पाशविकता की उसने मर्यादा तोड़ दी। फिर जब भाई दीवार बन कर उसके समक्ष आया तो उसने गुलशन हाँ उसने 'गुलशन' को भेजा जिसने उसे इन्सान से शैतान बना डाला—

और सान्कि ने वन्ना की तीव्रता में अपने गोलों में अपने अधरों को काट

लिया। उसकी मलिकाये हुस्न भाभी जो उसके भाई के लिए दुनिया मुझ पर हँसे थूके रोये यह मैं न तो सहन कर सकती हूँ और न करूँगी। मैं साबिर से शादी करूँगी चाहे अब्बाजान आप मेरी बरात में आये या नहीं मैं अपने अरमानों का गला घोंटने को कभी भी तयार नहीं हूं। और वह अपने पति को बदसूरत देख कर भाग गई। मक्कार लेकिन उसके लिए जिम्मेदार कौन है? सादिक का हाथ साबिर की गदन को छोडकर स्वत उसके अपने सीने से लग गया जसे उसका हाथ उसके अचेतन मन की आज्ञा से उसे दोषी ठहरा रहा हो। वह काँप उठा? उसे आज अपने ऊपर नफरत होन लगी। भावुकता में उसके हृदय ने यथार्थता की जो हत्या की थी—वह आज अपना नगा रूप दिखला रही थी। आज उसे महसूस हुआ कि मौलवी के शब्दों में कितनी पवित्रता थी कितनी सच्चाई थी और धम के प्रति कितनी आस्था थी? उस आज स्पष्ट मालूम हो रहा था—मौलवी के शब्द शब्द में खुदगर्जी, बदनियत और मक्कारी की बू थी। और वह अमीरजादा आजभी पाकिस्तान की बडी-बडी इमारतो म ऐशो-आराम की जिन्दगी बसर करता है। उसे तो वही सुरा और साकी मयस्सर है। और मैं आज भी वतन और मजहब की खातिर पहाडो की खाक छानता फिरता हू जसे मजहब का जिम्मा मुझ जसे गरीब इन्सानो पर है और वे पाजी हरामजादे जिन्दगी के लुफ्त लूट रहे हैं। और अप्रत्याशित उसका ध्यान साबिर की ओर गया जिसका चेहरा काला स्याह पड गया था कलेजे को वह अभी तक ऐसे पकड हुए था कि कहीं साँस न निकल जाय। कभी कभी साँस की तीव्रता से उसके अधर भी एक क्षण के लिए खुल जाते थे।

यह भी तो आजाद हिन्दुस्तान का सिपाही है। यह भी तो उसे मारने आया था वह भी एक रोटी के लिए आदमखोरी-वहशियापने का नगा नाच करता आया था। यह जग कितना खराब है। यह मजहब का झूठा रास्ता कितना जलील है कि भाई को भाई स मरवा दिया। ओह! इन्सान होकर इन्सान को मारना—और आगे उसकी बुद्धि दौड नहीं सकी क्योंकि उसके सोचने का माद्दा सीमा का उल्लघन नहीं कर सकता था। वह सोचना चाहता था—हिन्दुस्तान म भी कुछ लोग आराम की जिन्दगी बसर करते हैं और एक यह है

जो संस्कृति सभ्यता और मानवता को खत्म करने वाली लड़ाई में अपना खून पानी की तरह बहाता है। फिर आजादी से क्या मतलब फिर शहीदों की कुर्बानियों की क्या कीमत?—और भावावेश में सादिक उन्मत्त-सा हो गया। कदम और तेजी से उठे। पगडण्डी और छोटी होती गई और गहरी खाई समीप आती गई। उसने सोचा—फिर इन दानों से क्या मतलब? फिर पाक हिन्द का इन्सान कितने दिन तक जलता रहेगा—और—और वह सत्रह फीट की ऊंची चोटी से साबिर को गोद में लिए गिर पड़ा।

घाटी की रेशम-सी मुलायम बालू पर पड़े सादिक ने साबिर के शरीर को ढूंढा। एक पल के लिए उसे झकझोर कर वह कहना चाहता था—'भाई जान मुझे माफ कर दो मैं तुम्हारा छोटा भाई हूँ तुम्हारे जिगर का टुकड़ा हूँ और तुम अपनी शैतान-सी सूरत से इन्सान को जगा दो और बता दो सच्चाई क्या है? हम तो एक ऐसे देश की जरूरत है जो मजलूमों की जिन्दगी का ठेका लेता है। जहाँ इन्सानियत धर्म है और जहाँ इन्सान आसमान को नहीं जमीन की मुहब्बत और दुख-सुख देखता है।

और पागल-सा उठा सादिक साबिर की लाश ढूंढने। उसका हाथ बड़ी तेजी से जमीन पर चल रहा था। एकाएक चट्टान की जोर से टक्कर लगी। वह चीख उठा—'साबिर! साबिर!

और उसकी भ्रातृत्व में डूबी आवाज पहाड़ की घाटियों में चीख उठी—'साबिर! साबिर!

मगर साबिर का पता नहीं था और सादिक मौत के नजदीक जा कर साबिर को नहीं देख सका। उसकी आँखों से आँसू की जगह लहू टपक रहा था—क्योंकि वह अन्धा हो चुका था। मगर उसके लहू के हर कतरे में उसकी अन्तिम आवाज की गूंज थी—'हम तो एक ऐसे देश को जरूरत है जो मजलूमों की जिन्दगी का ठेका लेता है जहाँ इन्सानियत धर्म है जहाँ इन्सान आसमान की नहीं जमीन की मुहब्बत अनुभव करता है दुख-सुख समझता है।

और उसका दम निकल गया। हवा पर्वत की कन्दराओं में गूंज रही थी। सादिक की सच्ची आवाज पर्वतों की छाती को चीरती जा रही थी।

सफेद पोश

पत्नी का सूखा चेहरा माँ के कफ में खून
पिता की सिसकती जिन्दगी भाई का
भविष्य ? दो सौ रुपये चाँदी के गोल
गोल रोटी से गोल

नदी में उठा हुआ ज्वार मल्लाहों के लाख रोकने पर नहीं रुकता ठीक उसी प्रकार शेखर के मस्तिष्क में उठा हुआ परेशानियों का तूफान लाख चाहने पर भी नहीं रुकता है। माँ की खाँसी के साथ खून का गिरना पिता की सिसकती हुई जिन्दगी भाई के कालेज की फीस और पत्नी की आवश्यकतायें। एक जान लाख आफत। इस पर लिखने का धन्धा और प्रकाशकों का शोषण। क्या करे और क्या न करे ? बस इसी उधेड़-बुन में समय बीतता ही जाता है

पृथ्वी अपनी धुरी पर नियमानुसार चलती ही रहती है। वह दिन भर पागल-सा एक प्रकाशक के यहाँ से दूसरे प्रकाशक के यहाँ चक्कर काटता रहता है और सन्ध्या होने पर नदी के सुनसान किनारे पर जाकर बैठ जाता है। अपने नये उपन्यास धरती के विद्रोह की पाण्डुलिपि लिये हरी-हरी दूब पर घंटों सोचता रहता है और कभी-कभी उसकी सुकुमार सीपी-सी आँखों में आँसू छलक आते हैं। जिन्दगी के चित्र एक एक करके उसकी आँखों के आगे घूमने लगते हैं काटने लगते हैं वे चित्र खुद को। वह झुंझला उठता है और चल पड़ता है घर की ओर। घर में प्रवेश करते ही पहले वह मकान मालिक के कमरे की ओर देखता है नीचे रहने वाले लालाजी की ओर दृष्टिपात करता है तत्पश्चात् वह अपराधी की भाँति अपनी पत्नी के सामने खड़ा हो जाता है। पत्नी उसके चेहरे से उसकी अन्तर्वेदना को जान लेती है। बोलना चाहकर भी कुछ नहीं बोलती है। अपने अन्तराल के समस्त भावों अनुभावों का शोषण कर लेती है।

तब वह भयभीत सा पूछता— रोटी बनाई है ?' सरोज कहती— बनाई तो जरूर है पर सब्जी नहीं है।

'कोई बात नहीं थोड़ा नमक मिर्च ही दे दो उससे ही खा लूँगा।

सरोज परोसती हुई कहती— पर इस तरह कितने दिन चलेगा ? आज गाँव से चम्पला आया था कह रहा था माँ को खून पहले से अधिक पड़ रहा है। दस दिन के भीतर यदि पूनम' की फीस नहीं पहुँची तो उसका नाम कालेज से कट जायेगा मकान मालिक नोटिस देने की धमकी दे रहा है

शेखर का कौर यह सुनकर गले में अटक जाता है। अन्तर की व्यथा नेत्रों द्वारा सावन बनकर बरसना चाहती है पर पुरुषत्व धैर्य बंधाता है कि— यदि तू ही हिम्मत हार जायेगा तो इस बेचारी का क्या हाल होगा ? यह तो निस्सहाय नारी है। अतः वह हर रोज की भाँति दबे स्वर में बोलता है— बस कहीं न कहीं से रुपये अवश्य ले आऊंगा चिन्ता न करो सरोज धरती के विद्रोह को छपने दो इस उपन्यास में तुम्हारी और मेरी ही नहीं समस्त धरती की वेदना मुखरित होकर बोलती है बोलती ही नहीं एक विद्रोह के लिए प्रेरणा

देती है बस छपन दो यह तुम्हारा दुख-दारिद्र सब हर लगा ।

सरोज आशा के पंख पर उड उड कर उक्ता चुकी है । झूठी दिलासा उसके पीड़ित मन पर आघात करती है । वह तड़प उठती है । उसके सूखे कपोलो पर दो सून के कतरे टपक पड़ते हैं । उसका जीर्ण शीर्ण साड़ी को उसके रूखे-सूखे बालों को उसके शोषित यौवन को देखकर शेखर का हृदय फट पड़ता है। जिस रोटी को सेठ और नेता के कुत्ते भी नहीं खाते हैं और वह उसी के लिए तरसता है उसकी पत्नी आज से नही युगो से इसी रोटी को छत्तीस भोज और चौंसठ पकवान समझे हुए है । ऐसी दशा देखकर जी तो उसका भी चाहता है कि इस देवी के चरणों म जीवन को सारी निधियाँ बिखर दूँ पर वह लाचार है विवश है शोषित है।

जब सरोज मुस्करा कर किसी वस्तु को चाह करती है तो शेखर उसे शाब्दिक इन्द्रजाल म भटकाता रहता है उसकी प्रशंसा करके उसके अहम् और त्याग की भावना को झकझोरता रहता है । कहता रहता है कि भविष्य हमारा है इन सेठों और बदमाशो का नहीं । थोड़ा धय और रखो सोन और चाँदी स तुम्हारा घर भर दूँगा । सरोज की आँखें अनायास चमक उठती है । अधरों पर दामिनी सी स्मित हो जाती है और शेखर मस्त सा होकर क्षणिक आनन्द के सागर म तरन लगता है प्यार म डूबकर वह सरोज का हाथ अपने हाथ में ले लेता है धीरे धीरे सहलाता है और उसके भोलपन पर रीझ कर उसके कपोलों पर चुम्बनो की बौछार लगा देता है । सरोज निहाल हो जाती है । वह शेखर को अपन प्रगाढ आलिंगन में भरने के लिए अपनी कोमल बाँहें फला देती है । पर शेखर इस तरह दूर हट जाता है जसे कि वह नारी नहीं नागिन हो जो उस अपने म समेट कर डस लगी । वह विलग हो जाता है। सरोज उसे एक अतृप्ति म जलती हुई प्रतीत होती है पर वह चल पड़ता है साथ म 'धरती का विद्रोह' की पाण्डुलिपि लिए सडक पर अन्यमनस्क-सा निराश।

कोलाहल आवागमन का घुटा घुटा-सा वातावरण और उसम गरीब भिखारियों का करुण रौरव और उनकी पीड़ा । शेखर के चेहरे पर एक मार्मिक वेदना युगों की संचित अपना चिर वेदना जो एक शोषित के चेहरे पर छाई रहती है ।

आप ऐसा कहते हैं सुनकर आश्चय होता है। शेखर की आँखों में रोष है, कम्पन है।

यह व्यापार है सेखर जी। यह चौपट हो गया तो देशभक्ति रखी रह जायगी। लेखक लोग भूखो मर जायेंगे। उन्हें कोई पूछने वाला नही रहेगा। और एम० एल० ए० साहब सेखर की दुबलता को निशाना बनाते हैं—"मैं एडवान्स देने को तयार हूँ। बस चीज फड़कती हुई चाहिए।

यह मेरे बस की बात नही है मैं अनगल प्रलाप नही एक चोट-सी लगती है शेखर क हृदय पर और उसे याद आता है—अपनी दुरशा फटे कपड़ों स लिपटी विवशता की प्रतिमा सरोज अद्ध नग्न-सी भूखो विक्षुब्ध क्या करे वह ?

शेखर जी मैं आपको ठीक कहता हूँ कि एक पुस्तक का पारिश्रमिक पूरे पाँच सौ दूँगा। पाँचसौ रुपय कम नही होत और यह पूँजीवादी युग है। आज क युग में सच्चाई से क्या वास्ता ? एक पुस्तक लिखने क पश्चात सारे प्रकाशक आपक पीछे-पीछे घूमेंगे। आपकी जिन्दगी बन जाएगी। रामाधारी जी तुरन्त उठाकर एक बण्डल निकालते हैं। उस बण्डल म स एक पुस्तक निकाल कर गव से कहने लगते हैं— इसमे जीवन की कटु यथार्थता है, उसका नग्नवर्णन है उसक विश्लेषण में मनोवैज्ञानिक धारणायें है रोमान्स क वर्णन में सही विवचना क साथ-साथ "फ्रायड" की सेक्स परम्परा की परमोत्कर्षता है। बहक रहे हैं नताजी। उनकी आँखो मे अपार प्रसन्नता छा जाती है। शेखर हतप्रभ-सा देखता रहता है रामधारी जी क चेहरे पर उठती हुई रेखाओं को।

पुस्तक कर वे फिर कहने लगते हैं देखिए इस उपन्यास क हीरो और हीरोइन भाई-बहिन हैं फिर भी इनके रोमांस क वर्णन में लखक ने अमेरिका की तमाम पुस्तकों का पीछे रख दिया है। यह साहित्य की आज माँग है मेरे अकले की नही। सारी हवेलियों की कालेज क भावुक छात्रों की देश की गम्भीर समस्याओं में उलझे कर्णधारों की। आप नही जानत शेखर जी आपको अपनी रोजी की कसम है कि य अपनी बातें बाहर नही जायेंगी।

नेता जी के स्वर म भय और भावुकता है ।

शेखर बुत-सा सुन रहा है । वे जल्दी स पुस्तक क पन्ने उलटकर पढने लगते हैं—

सुनते-सुनते उसकी आत्मा कांप उठी

बस मैं समझ गया गांधीजी के भक्त आपका आशय ! आप चौंकते हैं । आपको चौकना नही चाहिए । आप व्यापारी पहले है बाद म देश भक्त और समाज सुधारक । आपको पैसे चाहियें और पसा के बदले आप देना चाहते हैं रोमास नरक ग दगी पतन ! पर रामधारीजी आप जसे व्यक्तियो को इस अनतिक्ता व भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दन वाली पुस्तका का घोर विरोध करना चाहिए, इस विनाश के तूफान को रोकना चाहिए । —शेखर तेज स्वर मे कहता है । रामधारीजी गम्भीरता से प्रत्युत्तर देते है— यह रुक नही सकता यह तो जीवन की यथार्थता है नग्न-सत्य है इसे कौन रोक सकता है शेखरजी ?

शेखर का चेहरा ताम्र की भांति तमतमा उठता है । मुट्ठियाँ बध जाती है । एक हिंसक विचार बिजली की भांति कौंध जाता है—गला टीप दू इस सफदपोश का राष्ट्र-घातक का साहित्य के शत्रु का और और शखर के विद्रोह के आग परिस्थितियाँ साकार हो जाती हैं । दुखी पत्नी का शोषित यौवन, मा का खून पिता की सिसकती जिन्दगी भाई का भविष्य दो सौ रुपये चाँदी के गाल-गोल चाँद से गोल-गोल सूरज स गोल-गोल धरती से गोल गोल रुपये !

चेहर की हृदय-विदारक व्यथा का परिलक्षित करके रामधारी जी बोलते है—स्वीकार हो तो एडवांस दिखाऊ ?

शेखर तड़प रहा है । पत्नी का सूखा चेहरा माँ क कफ म खून नया मौत एक मिश्रित मौत पिता की सिसकती जिन्दगी और भाई का भविष्य ? सास रोकने पर भी होठ आतुर हो जाते हैं— हाँ ! पर शखर की दृष्टि उसी समय बाहर की ओर चली जाती है। एक अत्यन्त लावण्यमयी युवती झूमती हुई उस की ओर आ रही है । युवती—जिसके मादक नयनो म नशा है अधर मुस्करा रहे हैं और अ ग-सौष्ठव पर विधाता की सजगता दृष्टिगोचर होती है सन्निकट

भाकर बोलती है—'खड़ी मैं बाहर खड़ी-खड़ी थक गई और आप भीतर जम ही बठे हैं।

रामधारी जी पुस्तक छिपा लेते हैं। छिपाकर बिलकुल झूठ बोलते हैं—शेखर जी से साहित्य चर्चा करने बठ गया था आप हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यास कार हैं। और वे तुरन्त उठ जाते हैं—आप दोनों बठिए मैं अभी आया।

शेखर इस मक्कारी पर झल्ला उठता है। उसका प्रत्येक विचार विद्रोह के लिए तड़पने लगता है। पुस्तक को युवती के हाथ में देकर व्यंग्य से बोलता है—'लीजिए आप इसे अवश्य पढ़िये इसम जीवन का नग्न यथार्थ है फ्रायड की सेक्सोलोजी है शिक्षा विभाग के कर्णधारों का दिवालियापन है और सच्चा रोमास है!

युवती भौंचक्की सी उसे देखने लगती है। शेखर भयंकर प्रतिक्रिया के कारण आप से बाहर होता चला जा रहा है—बस आप इस पढ़ जाइये जीवन का मूलमन्त्र यानि रोमांस कसे किया जाता है सीख जायेंगी।—युवती किंकत्तव्य विमूढ़-सी बठी रहती है। द्वार पर रामधारी जी आ जाते हैं। देखकर शेर की तरह शेखर पर झपटते हैं—यह क्या बेहूदगी!

आप इस बेहूदगी कहते हैं एम० एल० ए० साहब आपकी पुस्तक लिखने के पूर्व जीवन क रोमांस का अनुभव कर रहा हूँ! घबराइये नहीं मैं मोर्‍ ...

गुर्रा पड़त हैं नेताजी—

नानसेन्स वहशी! आपको गरीबी ने भूख ने पागल बना दिया है। इज्जत बचाना चाहते हैं तो सीधे-सीधे चले जाइये। तेज स्वर सुनते ही सब नौकर एकत्रित हो जाते हैं। क्या माजरा है व समझ नहीं पाते और शेखर चीख पड़ता है—आप इस रोमांस को नहीं रोक सकते हैं, यह जीवन का सत्य है यह होकर रहेगा इसे आप कदापि नहीं रोक सकते हैं। फ्रायड का मनोविज्ञान काम शास्त्र कभी झूठा हुआ है? और जब मैं ऐसा नहीं करूँगा तो पुस्तक कसे लिखूँगा और आप रुपया कसे कमायेंगे? ...

मालूम होता है कि य पागल हो गए हैं। दया को शब्दों में उतारने का निष्फल यत्न करते हैं रामधारी जी—इन्हें ससम्मान बाहर कर दो।

शेखर उबल पड़ता है– इसकी आवश्यकता नहीं है खुद ही चला जाऊँगा नेताजी आप चिन्ता न करें।

शेखर विजयी सैनिक की भाँति सड़क पर आ जाता है।

वही सड़क वही बरसात के कोलाहल की जगह शून्यता घोर शान्ति, और शून्यता में चीखती हुई आकृतियाँ पत्नी का सूखा सलौना चेहरा मा का लाल लाल खून पिता की सिसकती जिन्दगी भाई का भविष्य और इन सबके साथ इन सफेदपोशों के काले कारनामे, शिक्षा विभाग के कर्णधारों का दिवालिया पन और""और भविष्य में आने वाला तूफान भीषण परिवर्तनशील तूफान।

सौ का नोट

आत्मा सबमें होती है। परिस्थितिवश मनुष्य हाथ में आये दूसरे के रुपये को अपने काम में लाने की उत्कंठा करता है। तरह तरह के विचार उठते हैं यह भी करलूं वह भी करलूं। लेकिन हर बार सद्बुद्धि दूर ले जाकर उस अवसर को टाल देती है। और फिर विजय मनुष्यता की होती है।

चाय का पैसा देने के लिए जैसे ही मैंने अपनी जेब में हाथ डाला वैसे ही हाथ में सौ का नोट आ गया। पल भर के लिए मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, मैंने नोट को इधर उधर हिला-डुला कर देखा मुट्ठी में भींच कर देखा हथेली को खोल कर उसे मजमा लगाने वाले की तरह भेद भरी दृष्टि से देखा, पर उस नोट में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं पाया।

बैरा मेरे समीप खड़ा था। कौतूहल भरी दृष्टि से मुझे देख रहा था।

उसकी मजाक-सी मटमैली कमीज पंखे की हवा से हौले-हौले उड़ रही थी। मैंने प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और बोला 'क्या है ?'

बिल !" उसने स्थिरता से उत्तर दिया।

म्राह ! अच्छा एक कप चाय और ले आ।

वह अजीब ढंग से अपनी गर्दन हिला कर चला गया।

साधारण होटल था और बाहर बेमौसमी बादल बरस रहे थे, इसलिए सड़क का वातावरण धुग्रा धुग्रा-सा लग रहा था। मैंने बड़ी सावधानी से उस नोट को अपनी जेब में फिर डाल लिया।

यह नोट ! हरा-हरा कड़कता हुआ सौ का नोट और इधर मैं एक पत्रकार जिसे महीने में रोते रोते, दो-दो पाँच-पाँच करके वतन मिलता हो उसे एक साथ सौ का नोट मिल जाए और वह भी बिना हाथ पाँव हिलाए, तो उसकी प्रवृत्तियाँ एक साथ सजीव होकर उसकी बुद्धि उसके अन्तर के प्रकाश और उसकी मानवता को छल न झटका दे तो क्या आश्चर्य है ?

यह नोट जिसे मेरे पत्र के सचालक ने अपनी बीबी को गाँव भजने के लिए दिया था पर मनीआर्डर लगाने वाले क्लर्क की गलती के कारण यह नोट मेरे पास रह गया और उसने मुझे रसीद बना कर दे दी। मैं आह्लादित होकर सोचने लगा कि भगवान् जिसे देता है उसे छप्पर फाड़ कर देता है।

सौ का एक नोट और मेरे सहस्र अभाव।

मैं सोचने लगा—कल ही बीबी का मार्मिक पत्र कई रोज के बाद आया था। दैनिक जीवन की अत्यन्त आवश्यक वस्तुओं के अभाव में उसके प्रश्नों से निकले व दर्द मेरे कानों-कुहरों में अब फिर गूंजने लगे। उसने लिखा था, "राजू दो दिन से बीमार है दवा के पैसे नहीं हैं और उस पर सर्दी का मौसम; दवा न हो तो कोई बात नहीं। गरीबों के बच्चों की दवा प्रभु की प्रार्थना है मैं हार्दिक श्रद्धा से उसकी अर्चना और प्रार्थना में लग जाऊंगी लेकिन राजू के लिए ओढ़ने-बिछाने के लिए कम्बल और बिस्तर भी तो नहीं हैं। रात को सनसनाती हवा जब छोर-भी आकर उस फूल को लगती है तो वह करुणा भरी चीख एक माँ के हृदय को छलनी कर देती है। तुम तो मिलक हो न ? और

की विभीषिका से परिचित हो, यह भी जानते हो उस समय माँ के हृदय पर क्या गुजरती होगी। बच्चे की चीख उसका रोना उसका तड़पना सब कहती हूँ शान्त आत्मा संवेदना के सागर में डूब कर उन्मत्त-सी हो जाती है। विचारों के उठने मिटते तूफानों का सवय मनुष्य को जीवन और मृत्यु के बीच लाकर खड़ा कर देता है। जरा सोचो तो सही मैं माँ हूँ भला यह सब कैसे सह सकती हूँ ? फिर तुम स्वयं समझदार हो अधिक क्या लिखूँ ?

चाय का घूँट लेकर मैं कुछ देर के लिए विमूढ़ हो गया। मन-ही मन निश्चय किया कि इसमें से पचास रुपये अपनी बीवी को भिजवा दूँगा।

शेष रहे पचास।

जूते फट चुके थे और पैंट भी। कमीज अभी तक दो महीने हाथ से धोने पर आसानी से चल सकती थी और यदि बनियान फट भी गई है तो कोई बात नहीं। क्योंकि फटी या मली बनियान पर कमीज का जो आवरण पड़ता है वह उसे आलोचना से बचा देता है।

मैंने मन-ही-मन निश्चय किया कि शेष रुपयों से एक पतलून और जूता ही खरीदा जाए। आजकल न्यू मार्केट के सामने वाली दूकानों में रेडीमेड पतलून कुछ सस्ती भी पड़ती हैं और वहाँ से पतलून खरीदने पर पाँच रुपये चाय में भी बच जाते हैं और पाँच रुपयों में मगनोलिया में भी चाय पी जा सकती है। मय दोस्तों के साथ। मित्र लोग भी क्या याद रखेंगे कि किसी रईस से पाला पड़ा था।

रही जूतोंकी बात बीस रुपयोंकी रेडीमेड गरम पतलून और पाँच रुपयोंकी तफरीह और शेष रहे पच्चीसमें पच्चीस रुपयों में नए फैशन की स ड्लि आ सकती है लेकिन इस स ड्लिको खरीदने पर इतना पसा भी नहीं बचता कि एक जोड़ी मोजे खरीदे जा सकें तब ?' मैं गम्भीरता पूर्वक सोचने लगा। बाहर बेमौसम की वर्षा थम गई थी। सड़क जन रौर से पूर्ण हो चुकी थी। ट्रामों की अप्रिय ध्वनि और बस कण्डक्टरों की एक-सी आवाज मेरे कानों में बार-बार पड़ रही थी। मेरी गम्भीरता में इस शोरगुल से बाधा पड़ने लगी। मैं उठा होटल की घड़ी को देखा। तीन बज रहे थे। सीधा एकान्तवास करने के लिए कलकत्ते क काफी हाउस की ओर चला।

रास्ते में मेरी मन:स्थिति बड़ी विचित्र थी। बार-बार मैं अपनी जेब को सम्भाल कर इस बात का इतमिनान कर रहा था कि सौ का नोट सुरक्षित है या नहीं? कभी-कभी मैं यह सोच कर सिर से पाँव तक काँप जाता था कि कहीं वह क्लर्क आकर मुझे पहचान न ले। तब मेरे तमाम कल्पना के भवन खंड-खंड होते दीख पड़ते थे। मैंने अपने ललाट पर उभरे हुए स्वेद कणों को पोंछा। शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखा। सारे यात्री अपने-अपने वार्तालापों में मग्न थे। लेकिन कंडक्टर मुझे बड़े गौर से देख रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की तेज नजर मेरी ओर एकटक घूरना मुझे विचलित बना रहा था। मेरी अजीब-सी दशा थी। मैं अवश-सा चिल्ला उठा 'रोक दो।'

ट्राम अपने स्टॉपेज पर रुक गई। मैं उतर पड़ा। एक गहरी साँस लेकर मैंने अपनी विचलित आत्मा को धैर्य बँधाया। पर न जाने मेरी आत्मा इतनी घबराकुल क्यों हो गई थी? आत्मा का प्रकाश साहस और सत्य सभी तो मेरे अन्तर में विलीन होते जा रहे थे। तो भी रुपयों का मोह सर्वोपरि बना हुआ था। मैंने अपने मस्तिष्क में मचे हाहाकार आंदोलन और घबराहट पर विजय प्राप्त कर मौनस्वर में सोचा नोट मेरा है।

काफी-हाउस आ गया। मैंने कुर्सी पर बैठते ही सबसे पहले नोट को देखा। मैं विभोर हो गया। बैरा मुझे पहचानता था। उपाक से एक काफी ले आया। काफी पीते पीते मेरा ध्यान सामने वाली 'बार' पर गया। मानवी दुर्बलता जाग उठी। मन ने हौले से कहा क्यों न सस्ते खरीद कर आज रात को शराब पी जाए। प्रमुख भट्टाचार्य हर रोज कहता है कि बंधु कभी तुम भी पिलाओ। और प्रमुख के साथ सावित्री चटर्जी का ध्यान आ गया। इन दिनों वह मेरी ओर आकर्षित हो रही थी। बड़ी भावुक थी। सच कहता हूँ कि लेखक के लिए बंगाली पत्नी ही अधिक श्रेयस्कर रहती है। भावुकता के पर्तों पर स्वर्णिम वितान बुनने वाली बंगाल की नारी अश्रु और मुस्कान के मध्य सहज मानवीय भावनाओं को उभारने की अजीब प्रेरणा है। क्यों न एक उपहार आज उसके लिए ही खरीद लिया जाए? उसकी साड़ी फट चुकी है। गरीबी की वजह से शीघ्र खरीदना उसके लिए सम्भव नहीं है। फिर? मैं कुछ देर

सब पशोपेश में रहा। एकाएक मुझे अपनी समस्या का समाधान मिल गया। क्यों न सैंडिल बाटा कम्पनी की ही खरीदी जाए? नौ-दस रुपया में आजाएगी और इतना पैसा भी बच जाएगा जिससे सावित्री के लिए एक साड़ी खरीदी जा सकती है।

काफी समाप्त हो चुकी थी।

बैरा बिल के पैसे भी ले गया। मैं विचारों के संघर्ष में निमग्न वहाँ बैठा हो रहा, बैठा ही रहा।

घड़ी ने चार बजाए।

मेरी पास वाली कुर्सी पर एक बंगाली अपने किसी मित्र से कह रहा था 'पंचू! गोपाल हाल्दार ने आत्म हत्या कर ली।

'क्यों, ऐसी क्या बात हुई?

'कल भूल से उसने किसी को पाँच हजार की जगह सात हजार का पेमेंट कर दिया। बैंक मनेजर ने उसे पकड़वा दिया पर उसने किसी भी तरह यह आश्वासन देकर कि वह किसी भी तरह दो हजार रुपयों का प्रबन्ध अपने घर से कर देगा घर आया और छत से कूद कर आत्महत्या कर ली। उसका सिर फट गया था आँखें बाहर आ गई थी। ओह! कितना भयानक दृश्य था? और उसकी माँ दहाड़े मार मार कर अपने प्राण दे रही थी। समस्त परिवार में अकेला कमाने वाला था। क्या हाल होगा उस परिवार का?

उस युवक के शब्द चोट की तरह मेरे सीने में लग रहे थे। मेरे आगे पोस्ट आफिस के उस क्लर्क का चेहरा नाच उठा जो कठिनाई से महीने भर भावस खाता होगा। तब मेरे विचारों पर नई रोशनी छाने लगी। अभाव जैसे निष्प्राण हो गए। मुझे महसूस होने लगा कि अभी अभी वह अपना कैश गिनेगा। सौ रुपये कम होंगे। हल्ला होगा। पुलिस आएगी। तंग करेगी और बीवी का कोई गहना बेच कर इस आपदा से बचेगा अथवा उसकी एक मास की तनख्वाह कट जाएगी। और अगला मास भूख के पंजों में दबोचते हुए कटेगा। मैं भाव विह्वल हो उठा। अवश और बाचाल।

घड़ी ने सवा चार बजाए।

मैं उठा। मेरे हृदय का मानव जागा। आत्मा का प्रकाश प्रखर होकर मेरी

नस-नस म समा गया था। मेरी पत्नी मेरा बच्चा मेरी प्रयसी जूता और पतलून सभी उस क्लक के चेहरे की अपरिसीम वेदना में लुप्त हो गए थे।

मैं उठा और सीधा पोस्ट आफिस पहुँचा।

वहाँ पहुँच कर मैंन उस क्लक से सम्भल कर पूछा यह मनीआर्डर आपने ही किया है।'

रसीद को उलट फेर कर उसने कहा जी बाबू जी।

मर ?

वह मरी ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखता रहा।

पर तुमने मुझ से रुपये नहीं लिए। इस प्रकार गरजिम्मेदारी से काम करोगे तो कसे पार पड़ेगा ?

वह मरी ओर एकटक देखता रहा। अपने रुपयों को गिना। सौ कम थे। वह मेरी ओर पुन उसी प्रकार देखता रहा।

मैंने आद्र होकर कहा यह अपने सौ रुपये लो मैं देना भूल गया था, क्षमा करना दादा।

उसने रुपये ल लिए, पर वह यन्त्रवत मुझे देखता रहा। मैंने देखा, उसकी आँखों में आँसू भर आए हैं। वह वहाँ से उठा बाहर आया और मेरे चरण छूने चाहे। मैंन उसे रोक दिया यह क्या कर रहे हो ?

वह चीख कर इतना कह पाया बाबू जी ! मैं मर जाता मेरा सवनाश हो जाता आप नहीं जानत कि हम कितने दरिद्र हैं। मछली भी नहीं खाते केवल चावल केवल चावल। और वह फफक पड़ा।

न जाने मैं भी क्यों विह्वल हो उठा ? वहाँ से सिसकता हुआ बोला सतक रहा करो हर आदमी एक-सा नहीं होता हरएक का मन निमल नही होता।

और मैं व्यथा-सुख से बोझिल होकर चला आया।

मरी पत्नी मरा राजू मरी प्र यसी सगाव मरे अभाव सभी उस क्लक के आँसुओं म लुप्त हो गए थ।

सौन्दर्य और शैतान

> खेत क्या लहलहाये बालें क्या फूटी मानों
> धरती के बेटों का जीवन लहलहा उठा।
> उनके कठोर श्रम से बहकर पसीने की
> बूँदें धरती में से सोना बन कर प्रतिफलित
> हुईं।

रेतीला सागर जल के सागर से भी उज्ज्वल और शान्त था। न हलचल और न गर्जन। न मौजों की अठखेलियाँ और न किनारों से युद्ध व संघर्ष। आदि से अन्त तक एक अमर शान्ति और सादगी का आवरण ओढ़े विस्तृत था। उसकी समुद्र जैसी अचंचल और स्तब्ध लहरें पवन के झोंकों से अदमनीय हरकत करती सी प्रतीत होती थीं।

दूर से रेतीले सागर पर उगे हुए पेड़ मगर से दीख पड़ते थे और कहीं

विस्तृत घास का समूह नाव का भ्रम पैदा कर रहा था। एक विचित्र दृश्य और एक मृत्यु-सी शून्यता फैली हुई थी।

बोल रहा था केवल उल्लू जो ग्रामीणों के लिए अशकुन का प्रतीक माना गया है या बोल रही थी उस सागर से दूर ग्रामीण बालायें जो गीत गाने की चर्चा कर रही थीं। उल्लू की आवाज सुन इमरती ने कहा— मैं तो नहीं गाऊंगी बहिन उल्लू बोल रहा है शकुन अच्छे नहीं है।

सब ने बीच में रंग में भंग न हो जाय सोच कर उस प्रस्ताव को मान लिया और गाना कुछ देर के लिए रोक दिया गया।

चाँद अब नभ मण्डल को पूर्ण प्रकाशमान करने लग गया था। उसके चिर संगी तारे मस्त तथा बेफिक्र बराती होकर रात के ढलने के हर पल के साथ उस से दूर जा रहे थे।

सभी कोकिल कण्ठियों के कंठस्वर फूट पड़े—मधुर सहस्र निर्झरों की तरह मधुरता लिये मादकता लिए और यथार्थता की अनुपम सादगी लिए।

चाँद चढ़्यो गिगनार किरत्याँ ढल रयी है जी ढल रयी है।

\+ \+ \+

और इसी गीत की समाप्ति के साथ बालायें अपने घरों को जाने लगीं। रेगिस्तान की स्वर्णमयी बालू उड़ उड़ कर उनके अगले दाँतों पर जम चुकी थी जिससे उन पर पीलापन झाँक रहा था। कोई-कोई अब भी अपना आंचल फट कार रही थी जिसमें से रेत उड़ती सी नजर आ रही थी।

राधा ने भी अपने कच्चे घर में पैर रखा और रखते ही एक चोर की तरह बाबा की खाट की ओर ताका बाबा सो रहे थे। बाबा की साँस 'खर र र— सर र र' कर रही थी वह भी इतनी तेज कि अनजान व्यक्ति सुन कर डर जाय। बाबा की एक और आदत बहुत ही खराब थी वह यह थी कि वह हर कर वट के साथ 'हरे राम' शब्द का उच्चारण किया करते थे जैसे वे जाग रहे हैं।

गायें और बछड़े दाना-पानी करके सो रहे थे और छबीली नामक गाय अब भी 'जुगाली' कर रही थी। गोरी नामक गाय गर्दन को धरती पर टेक आँखें

उनके कठोर श्रम से बह कर गिरी पसीने की बूंदें धरती में से सोना बनकर प्रतिफलित हुईं। राधा कुछ विचारों में उलझी हुई थी। एकाएक बोली—लाओ बाबा गोरी के जाने का समय हो गया है।

सो बिटिया पर एक बात का ध्यान रखना और हो सके तो उस पर अमल करने की भी कोशिश करना। मोहन पराया चरवाहा है वह भी उस गाँव का जिससे हमारे ठाकुर की पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही है।

लेकिन बाबा मोहन ऐसा कभी जिक्र ही नहीं करता। वह बड़ा ही भोला और भला है। तुम उससे एक बार भी बात कर लो तो अपना बेटा बनाए बिना नहीं छोड़ो।

अच्छा!—राधा यह सुन कर अपनी पत्र-वाहिका 'गोरी' की ओर दौड़ी।

+ + +

मोहन टीले पर चहलकदमी कर रहा था। बार-बार टील पर से पगडंडी की ओर दृष्टि जमाए देख उसके हृदय की उद्विग्नता का अनुमान लगा जा सकता था। अन्त में वह टीले पर बैठ गया। एकाएक पीछे से किसी ने गुनगुनाया—

सुण ओ सूतोड़ा म्हारी बात, थालू थाँरी ओल आवे रे'

मोहन का चेहरा खिल उठा। बाहों को फैलाता हुआ बोला—फिर तुमने देर कर दी।

'मैं क्या करती ठाकुर जो देख रहा था तुम जानते नहीं कि वह तुम्हारा पुश्तनी दुश्मन है।

मेरा ?

'नहीं तो तुम्हारे ठाकुर का।

'जानता हूँ और कभी कभी डरने भी लगता हूँ।

'डरे मेरी जूती किसी के ताबेदार थोड़े ही हैं। जो जी में आएगा करूंगी। चाहे मारूंगी कूदूंगी खेलूंगी रोऊंगी ----।

'इतनी हिम्मत ! —मोहन ने राधा की भोर देखा दूध सी गोरी मक्खन-सी मुलायम बिजली-सी चचल बच्च सी वेफिक्र।

दूध पियोगी ? —मोहन ने पूछा।

हाँ

तो भाभो'

कहाँ'

उस गाय के पास वह बडी भोली है तुम उसका स्तन भी छू ँग सकती हो।

बाप रे, गाँव का धनी लड़ा तो।

'नहीं लडेगा फिर राधा मैं तो मोहन हूँ—दूसरा की गायों का दूध पीने वाला।

मगर मोहन वह जमाना सतजुग का था'

'तो क्या हुभा ? मोहन भौर राधा तो वही है न ? राधा शर्मा गई। मोहन ने उसकी रोटियाँ छीन लीं।

'मोहन मुझे यह मजाक पसन्द नहीं है।

'तो क्यों करती हो ?

उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

'चोरी की चोरी ऊपर से सीना जोरी।

'मोहन। कडक कर राधा ने कहा। उसका चेहरा 'ग्रहण लगे सूरज की तरह था सुन्दर भौर भयभीत।

'पहले दूध पिभो चल कर। राधा दूध पीने लगी। कभी-कभी मोहन दूध की फौव्वार उसके मुँह पर भी छोड़ देता था जिससे राधा रोष म भाकर भट सट बक दिया करती थी।

\+ × +

तुम्हारा ठाकुर मेरा खानदानी दुश्मन है भौर तुम मेरे गाँव की बहू-बेटियो को बुरी नजर से देखते हो। तुम्हारे भी बहू-बेटियाँ होगी।

'हैं मगर क्या आप अपनी बहू बेटियों को देख कर आँखें बन्द कर लिया करते हैं ?

खामोश निलज्ज कहीं के ! झुम्मन ! इसे गोडा लकडी दे दो गाँव वालों के समक्ष इसकी दुर्दशा करो। राधा के गाँव के ठाकुर का आधिपत्य भरा स्वर गूँज उठा। गरीब किसान डरे। स्त्रियाँ पहले से चक चक कर रही थीं।— बेचारा अब नहीं बचेगा। दुश्मनी ठाकुर ठाकुर में है मर रहा है बेचारा यह।

'दो पाटों के बीच में घुन भी पिसा जाय। एक बुढ़िया ने कहा।

मूर्ख गाँव वाले बनावटी हँसी हँस रहे थे शायद ठाकुर को राजी करने के लिए।

बूढ़ा शाक्यिा देख रहा था—पाशविकता अत्याचारों का नंगा नृत्य आत्मा का हनन प्रेम पर बलात्कार।

और मोहन चारों ओर से रस्सी में जकड़ा तड़प रहा था। उसका अंग प्रत्यंग फट सा रहा था। उसके चाँद से सुन्दर चेहरे पर लगे चोटों के दाग कलङ्क से प्रतीत हो रहे थे। फिर भी उसकी दृष्टि ढूँढ रही थी—राधा को जो पहले से ही ठाकुर की आज्ञा से कोठरी में बन्द कर दी गई थी क्योंकि गाँव की इज्जत का प्रश्न खड़ा हो गया था। बूढ़े बाबा की आँखें भर आईं। तड़पते हुए उन्होंने अपनी विवश आत्मा से कहा—मोहन ! यह भारत है जहाँ प्रेम की अजस्र धारायें बहती बहती सूख गई हैं। आर्थिक विषमता विधाता झूठी इज्जत खोखले दम्भ ने प्यार के गुलाब को हमेशा के लिए बरबाद कर दिया है। तुम भोले हो तभी तुम राधा को भगा कर नहीं ले जा सके अन्यथा तुम भी कह सकते थे आँखों में दो आँसू भर कर राधा मैं तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ। यह ससार भले ही नहीं पर हमारे ब्याह में बराती ये चाँद और सितारे होंगे। हमारे मिलन की साक्षी यह धरती और आकाश होंगे। लेकिन तुम्हारा प्यार ये सब कुछ भी नहीं जानता। वह भी तुम्हारी तरह भोला है। मगर इस तरह मिट

आओगे तो तुम्हारी मौत भी बेमिसाल कहलायेगी। बनो विद्रोही मृत्यु को देखकर पलायन मत करो।

'मोहन

'राधा'

'राधा राधा' ठाकुर ने गरज कर कहा— गाँव का ठाकुर गाँव वालों का पिता होता है, उसकी इज्जत होती है और तुम " "उसकी इज्जत से खेलना चाहती हो।

'घर का भेदी लका ढाहता है ठाकुर साहब, भूमि का राजा प्रजा से बर नहीं करता सागर का मालिक पानी से संघर्ष नहीं करता।—न जाने कौन-सी प्रेरणा से प्रेरित होकर राधा बोल रही थी। आँखों के आँसू प्यार का प्रमाण दे रहे थे।

राधा ! यह साँप का बेटा है।—ठाकुर ने कहा। राधा ने चारों ओर देखा—बहुती-दरिंदे खड़े थे।

फिर कुचलते क्यों नहीं।

राधा

दुस्मन हमेशा साँप हुआ करते हैं।

राधा के पल पल परिवर्तन से मोहन नितान्त अभिज्ञ रहा फिर भी एक घृणा उसके हृदय में पदा हो गई थी।

भुम्मन !—ठाकुर ने कहा— इसे खोल कर बैलगाडी के पहिए के नीचे दे कर मारो उसका भेजा कुचल डालो।—ठाकुर ने अट्टहास करते हुए कहा।

राधा सिहर उठी।

घबरा सी गई।

फिर उसके आगे मोहन के कुचले मुख का दृश्य घूम रहा था—मकान चाँद-सा मुखड़ा कुचला जाकर कितना भयानक और वीभत्स हो गया है।

राधा चीख उठी। कड़क कर बोली—'मोहन ! लो लो यह छुरा "" कटार ।

सारे लोग खड़े के खड़े रहे।

मोहन ठाकुर पर झपट पड़ा । वह कहे जा रहा था—'गरीबों के खून से अपनी मर्यादा की रक्षा करने वाले कमीने' आखिर इस विवश और सुप्त खून में उबाल आ ही गया।

रक्त की धारा शान्त गति से धरती पर पड़ रही थी। सौन्दय का शत्रान मानवता का दुश्मन तड़प रहा था।

लेकिन आज भी मोहन राधा और प्र रणामय डानिया ससार के चप्पे चप्पे में भ्रमण कर जीवन की दो तस्वीरें बना रहे हैं—इन्सानियत की और हैवानियत की सौन्दय की और शतान की स्वर्ग की और नरक की।

=०=

मनुष्य के रूप

बिल्कुल वही है जिसने मेरे सिर पर
ठोकर मारी थी । और उसका हाथ
अनायास ही उसी जगह पर चला गया
जहाँ जूते का चिन्ह बना हुआ था.....

मन में वेदना का भीषण झंझावात लिए वह शहर के प्रसिद्ध फुटपाथ चौरंगी पर भीख मांगा करती है। जीर्ण-शीर्ण मैले-कुचले वस्त्रों से अपनी अर्ध नग्न देह को ढकने का असफल प्रयास करती है फिर भी वह उसे पूर्ण रूप से छिपाने में सफल नहीं हो पाती। इसलिए आते जाते व्यक्तियों की एक पल के लिए पाप भरी दृष्टि उस की काली कलूटी पिण्डलियों पर रुक जाती है, फिर मन में पाप लिए कहीं और भटक जाती है। उसके सिर के केश रूखे-सूखे और अस्त-व्यस्त हैं जैसे महीनों से इनमें तेल नहीं पड़ा हो।

वह युवती है और यौवन भूख और चिन्ता की कटु प्रतारणा सहते हुए भी उसके अंग प्रत्यंग में विकसित-सा दिखाई दे रहा है।

वह मांगती है उन्हीं भिखारियों की तरह जो किसी व्यवसायी दल से सम्बंधित होते हैं और वहाँ से शिक्षा ग्रहण करके मांगने निकलते हैं। वह उतने ही नपे तुले शब्द प्रयोग करती है जैसे—एक पैसा बाबूजी एक पैसा। और राहगीर ठीक उसे उसी प्रकार उत्तर देता है 'क्या बला उत्पन्न हो गई, हटना। अथवा कोई कोई पिंड छुड़ाने के लिए उसके बर्तन में एक या दो पैसा डाल देता है। हाँ जब कभी चौरंगी से कोई यूरोपियन गुजरता है तो वह उससे शहद की मक्खी की तरह चिपट जाती है।

जब कभी कोई हजार बार अनुनय विनय करने के बाद भी नहीं देता है तो हरिया बड़बड़ा उठती है।

कलकत्ता की चौरंगी चारों वर्गों का रोमान्स लिए भीड़ से परिपूर्ण थी। हरिया एक किनारे पर बैठी हुई अपने बालों में से जुए निकाल निकाल कर समीप ही फेंक रही थी। *उसके समीप ही दो स्त्री-पुरुष खड़े-खड़े बड़ी तन्मयता* से बात कर रहे थे। हरिया कुछ देर तक तो देखती रही फिर उनके समीप जा कर बोली—'बाबूजी एक पैसा मेम साहब बहुत भूखी हूँ। हरिया अपनी मोटी और रोनी सूरत बना कर पाँवों में हाथ लगाकर कह रही थी—'बाबूजी एक पैसा बा''''बा''''ब ''''ब । भगवान के नाम पर।

'ओह !'—परेशानी में झुंझला कर पुरुष ने कहा—'कम्बख्त दो मिनट चैन से बात भी करने नहीं देती।'

हरिया ने एक बार फिर उन दोनों महानुभावों के पांवों को छूआ और उस की धूल को अपने सिर पर लगाया जैसे वे शिव-पार्वती के चरणों की रज हो। फिर भी वे दोनों कुछ न देने के बावजूद खीज उठे—'जाती है या नहीं हम भी तो तुम्हारे जैसे दो हाथ और दो पाँव वाले हैं। मेहनत मजदूरी करते हैं, और *अपना पेट भरते हैं। क्यों शीला ?* —उसी पल शीला का एक मित्र और आ गया। वह भी अपरिचित व्यक्ति की हाँ-में-हाँ मिलाता हुआ बोला—'अरे इन लोगों का तो एक दल है !'

हाँ-हाँ मैं जानता हूँ। दीला को भी मालूम है क्यों दीला ?'

बिलकुल इनका अपना एक दल है। यदि आप को विश्वास न हो तो पहर रात तक ठहर कर देख लो तड़के ही इसका सरदार आयेगा और इसे लेकर चलता बनेगा।

हरिया का ध्यान उन बाबुओं की बात की ओर नहीं था। वह तो सिर्फ अपने दाताओं स माँगना जानती थी और माँग भी रही थी।

हवा का एक हल्का झोंका आया। दीला की अलक उड़ पड़ी। चाँद ने चार मिनट तक उससे एकान्त में बात करने की अनुमति माँगी। दोनो घुलमिल कर बात करने लगे। जाते-जाते चाँद ने कहा—'मैं तुम्हारे मकान पर ग्यारह बजे पहुँचूँ गा। जरूर मिलना। तुम्हारी चीजें लेता आऊँगा।

चाँद चला गया। हरिया का माँगना अब भी जारी था। और दीला का मित्र ताव में आ रहा था। इस बार जब वह उसके पाँव पड़ी तो उसने सचमुच में उसके ठोकर मार दी। हरिया क्रोध मे लाल पीली हो गई। एक पजाबी महाशय बिगड़ पड़े। कहने लगे आहजी दे नहीं सकते तो साफ जवाब दे दिया करो। गरीबों को मारना अच्छा नहीं है।

'पर यह मानती नहीं। साफ कह दिया कि भिखारियों को भीख देना हमारे सिद्धान्त के विरुद्ध है।

भगवान ऐसे दिन किसी को भी न दिखायें। क्या मालूम बेचारी किन आफतों में होगी कि इसे माँगना पड़ रहा है।

जानता हूँ साहब उपदेश देने की कोई जरूरत नहीं है। पेण्ट की जब में हाथ डाल कर दीला का मित्र बोला।

हरिया पुन: अपने पूर्वनिश्चित स्थान पर आकर बैठ गई। दीला ने उस आदमी से मुस्करा कर कहा—'मेरी चीजें लेकर आना वर्ना काम नहीं बनेगा। इतना कह उसने अपने बेग से होंठों की लाली निकाल कर एक बार फिर लगाई और चलती बनी।

वातावरण रात्रि की गहनता के साथ फीका पड़ रहा था। हरिया ने अपनी

जगह बन्सी और एक होटल के समक्ष आकर बठ गई। मांगना पूववत जारी था।

होटल के प्राइवेट केबिन से ज्यों ही एक जोड़ा निकला त्योंही हरिया को आशा बधी कि अवश्य पसा मिलेगा। पर ज्योंही उसने मांगने के लिए अपना मुंह खोला त्योंही उसकी जिह्वा हलक से चिपक कर रह गई। यह तो वही पहले वाली शीला है जिसके सामने उसने ठोकर खाई थी और यह कुछ भी नही बोली थी। लेकिन यह अब तीसरे व्यक्ति के साथ क्यों ? यह समझ नही पा रही थी। कुछ देर तक सोचा फिर वहीं बठ गई। वह देखती रही उन दोनों को।

शीला उस पुरुष से हँस-हँस कर बातें कर रही थी। पुरुष कभी-कभी उसके तन को स्पर्श कर लेता था जिसे देखकर हरिया सिहर जाती थी। फुसफुसा उठती थी—कसी खराब औरत है जो परपुरुषों के साथ ही हो करती फिरती है। अरे यह तो वापस आ रहे हैं। इतना कहने के साथ ही हरिया न अपना मस्तक नीचा कर लिया। हाथ से धरती को कुरेदने लगी। दोनो व्यक्ति समीप आये। शीला ने मादक कटाक्ष करके कहा— सेठ जी दीजिए सौ हू रुपया मुझे सख्त जरूरत है कमरे का किराया और दूध वाले का हिसाब चुकता करना है।

घबराती क्यों हो दूगा दूगा अवश्य दूगा चल न।

देखिये सेठ जी मुझे आज बहुत जरूरत है। आप मुझे भीख ही द दीजिए पर इन्कार मत कीजिए।

भीख वह भी सौ रुपये की भीख माँगने पर तो मैं तुम्हें हजारो दे सकता हू। सेठ जी की आँखें चमक उठीं। शीला क चहरे पर आशा की रेखायें उमड आई। हरिया का हृदय आतुर हो उठा। ऐस विस्तृत हृदयी सेठ उसने बहुत कम देखे थे जो हजारों रुपये भीख मागने पर द देते हैं। दौड़ कर उसने अपना बतन फला दिया। बोल पडी सेठ साहब एक रुपया एक रुपया ""। और बीच म ही भडक कर शीला बोली— चामोद तू फिर आ गई नीच कहीं की जाती है या नहीं।

हरिया ने सेठ जी की ओर देखा जसे सेठ जी से वह शिकायत कर रही है कि देखिए मैं तो आप से मांगने आई थी और यह बीच में ही टपक पड़ी है।

कैसी बदमाश है यह। पर सेठ जी भी उसी स्वर में बोले— खड़ी-खड़ी मेरा मुँह क्या देखती है, जाती क्यों नहीं?

हरिया शिथिल हो आकर होटल के समीप खड़ी हो गई। सेठ जी ने दस दस के दस नोट निकाल कर शीला को दिये। हरिया को बड़ा दुख हुआ साथ ही जलन भी। सोचने लगी मुझे माँगना नहीं आता वर्ना सेठ मुझे एक रुपया देने से इन्कार नहीं करता। मुझे भी इस के नए कपड़े पहन के माँगना चाहिए पर क्या ये सब तो मेरा बदन इस तरह घूर घूर कर छुयेंगे। ""नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकती। मैं अपना बदन नहीं छुआ सकती और फिर मनवा मुझे छोड़ देगा। वह कहता है यारी बस एक बार ही करता हूँ। मुझे खराब औरत पसन्द नहीं। और वह वहाँ से शीला को देखती-देखती अनमनी सी चलती बनी।

चौरंगी पर पूर्ण घूँघता छाती जा रही थी। हरिया के आगे दो महाशय बातें करते हुए जा रहे थे। एक आदमी बड़े ही आर्द्र स्वर में कह रहा था— भाई साहब! आज ही सवेरे हवड़ा उतरा था। सामान बीवी की देखभाल में छोड़कर मैं 'लटरिन' को गया। पीछे से बीवी को भी प्यास लगी। वह पानी पीने के लिए गई। पानी पीकर ज्योंही वह वापस आई कि सारा सामान गायब। उसने रुमाल निकाल कर अश्रु पोंछे। दूसरा आदमी तो बस चलता ही जा रहा था। पहले आदमी ने हाथ जोड़ कर फिर कहना प्रारम्भ किया— दिन भर से हम दोनों भूखे हैं। ऊँचे ब्राह्मण खानदान के होने के कारण हम भीख भी नहीं माँग सकते। आप कृपा करके कुछ दीजिए न। हरिया को उस सभ्य पुरुष पर दया आ गई। उसने चाहा कि मैं अपने पैसों में से आधे इसे दे दूँ। यह भीख नहीं माँग सकता है तो उसे नहीं माँगनी चाहिए, पर यह भीख माँग भी तो रहा है। कैसा विचित्र जीव है।

सेठ ने बिना कुछ कहे पाँच का एक नोट निकाल कर उसे देना चाहा। हरिया को भी तृष्णा जागी। बीच में ही कूद पड़ी। बतन आगे करती हुई बोली 'बाबूजी-मुझे भी ""।

ऐं । —माँगने वाला कहता-कहता चुप हो गया। अवाक् रह गई हरिया। वह चित्रवत् आँखें फाड़ कर माँगने वाले सज्जन को देखती रही। फिर मन ही

एक मछली : एक औरत

एक माँ उसकी जवान बेटी और एक सैनिक। उसके हाथ में एक भुनी हुई मछली। उनकी भूखी आँखें देख रही हैं उस मछली को। एक मछली एक औरत।

जब-जब युद्ध का नाम सुनता हूँ मुझे अपने बरमा निवासी मित्र तूँ का ख्याल आ जाता है तू की माँ बरमीज और बाप भारतीय था। अब उसके रूप रंग में दो विभिन्न नस्लों का सुन्दर मिश्रण था और उसकी बुद्धि अत्यन्त कुशाग्र थी। विज्ञान का छात्र होने के कारण वह नीरस जरूर था लेकिन उसे संगीत की ओर थोड़ी सी अभिरुचि भी रखता था। बुजदिल इतना था कि दो सांडों को लड़ते देख अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लेता था। घबरा कर

मन बोली— वही बिल्कुल वही जिसने मेरे सिर पर ठोकर मारी थी। और उसका हाथ अनायास उसी जगह पर चला गया जहाँ जूते का चिन्ह बना हुआ था।

नये भिखारी के पाँव काँपने लगे। हाथ नोट को लेते हुए डर रहे थे पर अन्त में उसने नोट थाम ही तो लिया।

सेठ चलता बना। नया भिखारी हरिया को घूरता जा रहा था। हरिया किंकर्त्तव्य विमूढ़-सी उसे देखती रही और अन्त में कह उठी—'शरीफ का बच्चा चोर बदमाश। मेरे माँगने पर ठोकर मारता है और खुद रो रो कर पाँच के नोट लेता है और उस रण्डी के लिए नखरे खरीदता है। थू और उसने सड़क पर जोर से थूक दिया।

चौरंगी का आवागमन अब बिलकुल कम हो गया था। हरिया एक ओर इठला कर जा रही थी जैसे वह बहुत अच्छी है बहुत बड़ी है—उन सभी आदमियों से। तारे निष्प्रभ होते जा रहे थे।

=०=

एक मछली : एक औरत

एक माँ, उसकी जवान बेटी और एक सैनिक। उसके हाथ में एक भुनी हुई मछली। उनकी भूखी आँखें देख रही हैं उस मछली को। एक मछली एक औरत।

जब-जब युद्ध का नाम सुनता हूँ मुझे अपने बरमा निवासी मित्र न्नूं का ख्याल आ जाता है न्नू की माँ बरमीज और बाप भारतीय था। अतः उसके रूप रंग में दो विभिन्न नस्लों का सुन्दर मिश्रण था और उसकी बुद्धि अत्यन्त कुशाग्र थी। विज्ञान का छात्र होने के कारण वह नीरस जरूर था लेकिन वह संगीत की ओर थोड़ी सी अभिरुचि भी रखता था। बुजदिल इतना था कि दो साँडों को लड़ते देख अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लेता था। घबरा कर

कहने लगता था कि भाई ये सांड उछल कर हम पर आ पड़े तो हम मारे जाए गे।

मैं उसे समझाया करता था मू ! मृत्यु अटल है उसके लिए अपने आपको दुश्चिन्ताओं में डालना व्यर्थ है। मृत्यु के हाथ इतने लम्बे पतले तेज और अचूक होते हैं कि लोहे की सात दीवारों में भी बन्द हो जाने पर भी वह आएगी ही। पर मेरे इस कथन का उस पर कभी भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। आदमी का कमजोर दिल सहजोर कसे हो ? उसमे आत्म-बल विश्वास और निर्भयता कसे आये इस पर मैं घंटों चिन्तन किया करता था।

मैंने देखा मू प्राय भारतवर्ष जाने का स्वप्न देखा करता था। कहता था 'यह मेरी पितृभूमि है। एक पुस्तक में मैंने पढ़ा था कि वहाँ देवता खेला करते हैं। वहाँ हिमालय की सुन्दर और बर्फीली चोटियाँ हैं। वहाँ पतित-पावनी गगा जमुना है। वहाँ प्रेम का अमर स्मारक ताजमहल है। ""पिताजी कब मुझे वहाँ ले चलेंगे और कब मुझे ताज दिखाए गे ! कभी-कभी उसकी आँखें आर्द्र हो जाती थीं। एसा मालूम होता था कि उसके अन्तःस्थल में भारतवर्ष को देखने की उत्कंठा उमड़ रही है।

जब मैं सिंगापुर से रवाना हुआ तब वह नीरस व्यक्ति कितना भावुक हो गया था। मुझ से लिपट लिपट कर फूट पड़ा था। राम और भरत के कत्त व्या भिमुख मिलन की प्रदर्शन की भावना से परे वह निश्छल महा मिलन था। मेरी आँखों में भी अश्रु आ गये थे। मू हल्का होकर अन्त में बोला मैं समझता हूँ कि अपने इन अश्रुओं के अलावा कोई भी अमूल्य भेंट हम दोनों के पास नहीं है। तुम मेरे और मैं तुम्हारे इन आँसुओं को कभी नहीं भूलूगा।

मेरे होठों पर सूखी मुस्कान नाच उठी 'अरे, आज तुम कवि हो गए।

वह भी मुस्करा पड़ा।

जहाज चला।

इसके बाद मू का कोई खत नहीं आया।

एक दिन अचानक उसका एक खत मिला।

'प्रिय भाई,

सोचते होगे कि इतने दिन की चुप्पी के बाद [आज यह अचानक पत्र मैंने तुम्हें क्यों लिखा ? मैंने इरादा किया था कि अब तुम्हें कभी भी पत्र नहीं लिखूंगा। क्योंकि मैंने अनुभव किया है कि हर मित्र अलग हो जाने के बाद दूसरे मित्र को भूल जाता है। समय की दरार स्मृति पर विस्मृति का आवरण डाल देती है और यह आवरण गहरा होते-होते अन्धकार का रूप धारण कर लेता है। अन्धकार अर्थात पूर्ण विस्मृति ! प्रीत के प्रशस्त पथ का पूर्ण विराम।

आज जापानियों के हमले से मेरी मातृभूमि क्षत विक्षत हो रही है। आदमी का जीवन चींटी के बराबर हो गया है। बागों के हरे भरे फूल बमों की विषाक्त हवा से मुरझा गए हैं। उन मुरझाये हुए फूलों को देखकर मेरे सामने तमाम बरमा के इन्सानों की आकृतियाँ नाच उठी हैं। वे उन्मन और दुखी चेहरे संगीनों और बमों की ओर लगे हुए हैं। वे भयभीत नजरें वायुयानों की ओर भय भरी दृष्टि से देख रही हैं। और तब उन नजरों का अर्थ मेरे सामने स्पष्ट हो जाता है। सम्मिलित स्वर गूंज उठता है—मुक्ति, मुक्ति, स्वतन्त्रता।

मुक्त मानवों की मनोकामना साम्राज्यवादियों द्वारा पद दलित होकर चिंघाड़ मारती है। मैं वाचाल होकर अपने करुण-कुहरा को बन्द कर सकता हूँ। तड़प कर कहता हूँ—प्रभु ! कभी भी गुलाम देश में पैदा न करना। गुलाम आदमी कितना निरीह और कितना दीन होता है। न देश के लिए लड़ सकता है और न देश को छोड़ कर भाग सकता है। मोह और सपथ प्रेम और त्याग पर सभी विचलित !

मैं बहुत दुखी हूँ। कल एक बम गिरा था। गोरी फौज भाग गई थी। मैं सांडों की लड़ाई से डरने वाला न जाने क्यों सड़क पर चला आया था। कदाचित जीवन की इस विभीषिका को देखने का संयोग था। मैं भारी कदम उठाता बढ़ रहा था। जोर का कोलाहल चीखें ललकार।

इन्सान इन्सान को मारने की दौड़ में पछाड़ रहा था। आदमी का इतना संकुचित और इतना स्वार्थी उस दिन ही देखा था। एक माँ ममता और

वात्सल्य की सजीव प्रसमूर्ति पूरण नारी अपने मासूम बच्चे को अपने परों से रौंदती हुई भागी चली जा रही थी। बच्चा चिल्ला रहा था बिलबिला रहा था। मैं उसे उठाने के लिए उसकी ओर बढ़ा ही था कि एक बलिष्ठ व्यक्ति ने अपना पांव उस पर रख दिया। चीख शांत हो गई। सांस थम गई। बच्चा मर गया। वह माँ मर गई जिसने उसे पैदा किया था। तुम तो जानते हो न सन्तान ही माँ और बाप को हमेशा जिंदा रखती है। पर मृत्यु के इस संसार में कौन किसी की परवाह करता ? सबको अपनी चिन्ता अपना मोह अपनी सुरक्षा।

मेरी माँ ने आकर कहा नू। चलो हम भी भाग चलें।

मैंने अपनी अंगुली उस ओर उठा दी। अब तक बच्चे के पेट पर किसी सैनिक का नालदार जूता पड चुका था। पेट की पसुडियों सी मुलायम चमड़ी फट चुकी थी। नसें और आतें बाहर निकल गई थीं। कितना वीभत्स दृश्य था ? मेरी माँ चीख पड़ी। क्रोध से फुफकारती हुई बोली, 'वह माँ नहीं डायन है डायन ! कितना प्यारा बच्चा है ?

वही कोलाहल वही शोर, वही चीखें और वही भ्रत नाद।

मैं भी उस भीड़ मे भाग रहा था।

मेरे पास एक बीस वर्षीय युवक जिसका चेहरा एक खूनी से कम भयानक और क्रूर नहीं था लिपटता हुआ चल रहा था। उसके शरीर से गन्दी नाली के सड़े पानी की तरह बदबू आ रही थी। उसके लम्बे-लम्बे बालों में रेंगती हुई जुएं साफ नजर आ रही थीं। मैं उससे डर गया था। लेकिन मैंने देखा कि वह युवक हाँफता भागता भी अपने काम को करता जा रहा है। वह मेरी जेब म हाथ डाल रहा था। मैंने महसूस किया और उसे पकड़ लिया। वह काँप गया। उसकी आँखें विस्फारित हो गईं और वह पूरे जोर के साथ बोला 'चावल !'

चावल ! भूख ! जिन्दगी !

भूख की भयानकता मैं उस दिन ही जान पाया। जिन्दगी से अधिक महत्व पूरण यह भूख होगी इस सत्य को मैंने कल ही जाना। चावल चोरी और

जिन्दगी। नग्न और पीड़ामय सत्य।

मैं भावावेश मे आ गया। सारी दौलत जो मेरी जेब म थी मैंने उस युवक को दे दी। युवक तुरन्त चला गया।

वही कोलाहल वही चीखें और वही आर्त्तनाद!

आज रात हम समुद्र के किनारे बठे हैं। कब जहाज मिलेगा। कुछ पता नही। जीयेंगे या मरेंगे इसका भी कोई भरोसा नहीं। दुश्मनों के मृत्यु का आवाहन करने वाले जहाज मृत्यु-नाद करते हुए हमारे ऊपर मडरा रहे हैं। सनिक चावल के बदले मुट्ठी भर दानों के बदले नारी को खरीद रहे हैं। और नारी कितनी लाचार हो गई है कि दानो के बदले अपने आपको बेच रही है। और यह दिल दिमाग और इन्सानियत से हीन सनिक इन नारियो को इतने दाने भी नहीं दे पाते जितने इनके पेट की आग शांत हो सके। वे सनिक चाहते हैं कि मरने के पहले भोग लिप्सा के महासागर में डूब कर अपनी वासना की अग्नि को ठडा कर लें।

मेरे सामने एक माँ है एक उसकी जवान बेटी है और एक सनिक है। सनिक जवान है। उसका लाल लाल चेहरा बडा प्यारा है। उसका शरीर मॉसल है और उसकी काली-काली आँखें बडी-बडी और प्यारी-प्यारी हैं। उसके हाथ में एक भूनी हुई मछली है। उस मछली को उस माँ की भूखी आँखें देख रही हैं। सनिक कह रहा है, एक मछली एक औरत!

माँ का चेहरा वीभत्स हो जाता है। उसकी आँखो म मेरी कल्पना के बाहर की निलज्जता चमकती है। अपने होठों पर साँप की जीभ की भाँति अपनी जीभ को बार-बार बाहर निकाल कर फेर रही है।

वह सनिक शांत मुद्रा में अपने हाथ की मछली को देख रहा है। वह फिर बडबडा उठता है— एक मछली एक औरत!

माँ अपनी बेटी को उस सनिक को दे देती है। मछली माँ के हाथ में आ जाती है। लडकी बगाली भाषा म कुछ चिल्लाती है जिसे मैं नहीं समझ पा रहा हूँ। लेकिन उसकी करुणा भरी आँखों मे दहकती हुई आग अपने नारीत्व की सुरक्षा की कामना कर रही है। मैं नपुसक सा देखता रहता हूँ और वह

उस युवती को लेकर अन्धकार में विलीन हो जाता है।

नई हलचल पैदा हो रही है।

एक भागता हुआ सैनिक कह रहा है 'हमला भयानक हमला, भागो भागो !

वही भाग-दौड़ वही चीखें और वही आर्त नाद !

मेरे दोस्त !

मुझे विश्वास है कि इन भयंकर क्षणों में कोई भी अपने जीवन को नहीं बचा सकेगा। इस बार जो बम गिरेगा उसमें तुम्हारे मित्र का जीवन दीप बुझ जाएगा। मेरे मन की अभिलाषा, उमंग, भावना सभी की सभी असंतोष की आग में जलती हुई सो जाएगी। पर मुझे विश्वास है कि जो भी बचेगा वह मानवीय भावनाओं को मानस लिए मनुष्यों की मुक्ति का सतत प्रयत्न करेगा। इस पाशविक और बर्बरता के क्षणों को क्रूरता का वास्ता दिला कर भविष्य में शांति का उद्‌घोष करता रहेगा ताकि युद्ध का यह अन्धकार शांति के प्रकाश में खो जाय।

यदि मैं जिन्दा रहा तो थका-मांदा भी भारतवर्ष आऊंगा और तुम्हारे दर्शन करूँगा।

+ + +

तू का इसके बाद कोई खत नहीं आया। वर्षों से इन्तजार कर रहा हूँ कि कभी थकामांदा मेरा अपना तू आ जाय और अपनी प्रेम की भेंट मुझे दे जाय। सिसक कर कह दे भाई ! मैं आ गया हूँ पर क्या करूं देखो युद्ध ने मेरा रूप मेरी एक आंख और मेरा एक हाथ ले लिया है। ओह ! इतना विकृत है ? तू नहीं नहीं नहीं। कहाँ है तू ?

और मैं उस खत को बार-बार पढ़ने लगता हूँ। जब कभी युद्ध की बात सुनता हूँ।

एक था आदमी

वह आदमी तो मर गया, जिसकी आवाज
में एक भूखे एक तंग आदमी का असं-
तोष था। जिसके शब्द-शब्द में आग
जोश और इन्कलाब था। वह झूठी हँसी
हँसता दूर भागता। और एक चोर उसे
सही रास्ते से भटका रहा है।

अभी जिन्दा है मरा नहीं बदल जरूर गया है। इतना तो नहीं बदला कि मुझे पहचाने ही नहीं पर हाँ मुझे देख कर कतराता जरूर है और यदि संयोग से कतराने का मौका नहीं मिला तो फिर एक विचित्र हँसी हँसकर मुझे तपाक से सलाम करता है और सलाम के साथ-साथ एक ही साँस में बोलता है— कहिए मास्टर जी कैसे हैं? अच्छे! अच्छे ही रहिए फिर मिलूँगा अभी मेरा एक जगह अपाइन्टमेन्ट है। और मैं कुछ उत्तर दूँ, इसके पहले वह मुझसे काफी दूर भाग जाता है।

कि मनुष्य को ऊपरी टीप-टाप या ऐसे कमरे देखकर मोहित नहीं होना चाहिए। उसका संकेत अपने कमरे की ओर था पर मेरा अन्दाज था कि हम तीन साहित्यकार एकत्रित हुए हैं तब कोई गम्भीर विषयों पर वाद विवाद होगा। आज की साहित्यकी ज्वलन्त समस्या मनोविश्लेषण की भ्रांति या व्यक्तिवादी उपन्यासों के प्रभावों पर गर्मागम बहस होगी लेकिन मोहन हमें बोलने का मौका ही नहीं दे रहा था।

'दर असल जितनी तकलीफ और मानसिक झंझट आजकल मुझे है शायद ही और किसी को हो। उसने एक लम्बी आह छोड़ी। उस आह के साथ जो प्रस्फुटित हुआ वह बहुत ही निराशा में डूबा हुआ था—'आज जब मैं अपने विगत साहित्यिक जीवन पर दृष्टिपात करता हूँ तो हृदय उस स्मृति में फूला नहीं समाता है। कितना स्वतन्त्र और उत्साही जीवन था। खूब लिखता था। देखिए ये हैं मेरी तीन पुस्तकें।

वह उठा और तीन पुस्तकें सामने की टूटे किवाड़ों की आलमारी के भीतर से निकाल लाया। मैं तो इसलिए अवाक था कि क्या इस व्यक्ति की भी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं? तभी धम्-सी हलकी आवाज करती तीनों पुस्तकें मेरे सामने आ पड़ी। मैंने एक बार उन पर अविश्वास भरी निगाह डाली। पुस्तकों पर जमी गर्द कह रही थी कि महीनों के बाद हमारा हमारे स्वामी की अंगुलियों से स्पर्श हुआ है। मोहन की अंगुलियों के निशान भी पुस्तकों पर अंकित हो गए थे।

मैंने पुस्तकों के पन्ने पलटते हुए शान्त हुए व गम्भीर स्वर में पूछा—ये पुस्तकें कब प्रकाशित हुई थीं?

लगभग छह सात साल हो गए हैं। उस समय मेरी रगों में और हृदय में आप सबकी भांति साहित्य के प्रति या लिखने के प्रति असीम मोह और उत्साह था। उस समय मेरी पहली पत्नी भी जीवित ।

तो क्या वह''''।

हाँ शेखर जी मेरी पहली पत्नी आज इस संसार में नहीं है। लेकिन आज भी उसकी याद मेरी हर धड़कन में बसी है। उसने तो मेरे जीवन में स्वर्ग बना

दिया था। वह बहुत ही सुघोल और प्यारी थी। आज भी उसकी याद पर दिन भर आता है। और मोहन ने अपनी व्यथित पलकों को नीचे झुका लिया।

मैंने उन्हें सान्त्वना दी 'मरे की स्मृति के सहारे जीवन गुजारा जाता है। हर प्राणी का महत्व उसके अभाव से ही मालूम होता है पर किसी की स्मृति में जीवन के महत्व को घटा देना शायद श्रेयस्कर न हो क्योंकि जीवन बार बार नहीं मिलता।

'आप ठीक कहते हैं। पर मेरी नई पत्नी की जरूरतें मेरे अनुकूल नहीं हैं। उसे जिस चीज की जरूरत हो उसी समय उसके सामने हाजिर की जाए वरना वह मुझसे अच्छी तरह बात भी नहीं करती।'

शेखर जी! यह पब्लिसिटी का धन्धा है जब पैसा आने लगता है तो कोई थाह नहीं। अन्यथा एक पैसा भी नहीं दीखता।

यह व्यक्ति इतना दुखी हो सकता है, मुझे कल्पना नहीं थी। क्योंकि मैंने इसे जब कभी भी देखा उस समय उसके चेहरे पर अहम् की रेखा नाचा करती थी और ओठों पर मुस्कान थिरका करती थी।

'जब मेरे पास पैसा नहीं होता है तो आप जानते हैं कि मेरी बीवी भी मुझसे उतनी आत्मीयता से नहीं बोलती जितनी आत्मीयता पैसों की झंकार के साथ उसकी आवाज में पैदा होती थी। उस समय मुझे कितना दुख होता है? शेखर जी! मेरी पहली बीवी की लड़की ने तो मेरी जिन्दगी और तबाह कर दी है मुझे इतना दुखी कर दिया है कि मेरी हर साँस घुटी घुटी-सी लगती है। कभी-कभी तो मैं इतनी भयानक कल्पना कर लेता हूँ कि एक दिन मेरा दम घुट जाएगा और मैं मर जाऊँगा। उसके बाद मेरे ये नन्हें-नन्हें बच्चे।'

छि छि यह आप क्या कह रहे हैं! ऐसी अशुभ बात मुँह से नहीं निकलनी चाहिए।

तभी उसकी छोटी बच्ची आकर बड़े ही नटखटपन से अपने ओठें और तेज स्वर में बोली—'बाबूजी! माँ कहती है कि चाय घर में नहीं है।'

'नहीं है तो अपनी माँ से कह देना कि नीचे से मंगा लो।

'पर पसे ।

मोहन ने अपने हाथ से बच्चों का मुंह बन्द कर दिया और हम सबकी परवाह किये बिना ही वह तीर-सा निकल गया। भीतर से जो उनकी दबी-दबी कर्कश आवाज आ रही थी उससे साफ जाहिर हो रहा था कि वह अपनी बीबी को डांट रहा है और उसकी बीबी पाषाण प्रतिमा सी बनकर ईंट का जवाब पत्थर से दे रही है। मेरा हृदय बोझिल सा हो गया था। साथी शीलभद्र से कहा— यहाँ आकर हमने अच्छा नहीं किया। हमें यहाँ से चले चलना चाहिए, इसका ऊपरी और घर के बाहर का रूप ही महान् है पर परिवार और घर तो एक नरक से भी ।'

बीच में ही शील बोला— देखर यह पब्लिसिटी आफिसर है, बहुत कमाता है काफी रुपया ।

चुप, वह आ रहा है।—हम दोनों बिलकुल चुप हो गए।

बाहर धूप चमकने लगी थी। उसकी एक-दो किरणें कमरे में नाचने लगी थीं। हवा एकदम रुक गई थी इसलिए खिड़की के हरे रंग के पर्दे हिलने बिलकुल बन्द हो गए थे।

उसने आते ही अपनी पत्नी की शिकायत की— यह औरत कितनी मूर्ख है साहब टेबल की दराज में पैसे पड़े हैं लेकिन आपने खोजने की कोशिश नहीं की और कहलवा दिया कि पैसे नहीं हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरी पहली पत्नी बहुत अच्छी थी। उसके लिए एक इशारा काफी था और जब मेहमान आते तब तो वह उन्हें खूब प्रेम से खिलाती पिलाती थी। यह उसको बस शौक-सा था। ""हाँ तो मैं क्या कह रहा था? हाँ! याद आया, इस नीरस जिन्दगी में आजकल मुझे कुछ नहीं रुचता। हर चीज से मुझे विरक्ति-सी हो गई है। चाहता हूँ कहीं दूर चला जाऊं?'

'मैं आपके इस विचार से जरा भी सहमत नहीं हूँ। शीलभद्र हल्के स्वर में गर्जा—'जीवन-संघर्ष से भागना आज के युग का सन्देश नहीं।

फिर मैं क्या करूं? उसने यह कहकर ऐसी मुद्रा बनाई कि जैसे वह कोई गलती कर गया है पर दूसरे ही क्षण उसके हृदय की पीड़ा उसको आशा लिए

बिना ही चीख पड़ी—'हर माह का खर्च छह सौ रुपए है इतने रुपये लाऊँ कहाँ से ? इन फिल्म कम्पनियों का कोई ठीक भरोसा नहीं, अपनी शान की रक्षा तो मुझे किसी तरह करनी ही पड़ती है। लोग मुझे पब्लिसिटी ऑफिसर समझते हैं पैसे वाला समझते हैं पर मैं आजकल बहुत तंगी में हूँ सेखरजी ! मुझे आपकी मदद चाहिए। उसकी आँखें मेरे ऊपर जम गई।

आप यह क्या कह रहे हैं ? मोहनजी ! मैं तो आपके बच्चे की तरह हूँ, मुझे शर्मिंदा मत कीजिए।'—और वास्तव में मैं शर्म से गड़ गया। मेरी आँखें नीची हो गईं। बहुत ही धीमे स्वर में बोला—आप मुझे उपन्यास लिखकर दीजिए मैं उसे छापूंगा। पेस आपको एडवांस दिला दूंगा।

'अब मैं यही काम करूंगा पर मेरा दिमाग आजकल जरा भी काम नहीं करता सेखरजी। परिवार का इतना सारा कोल्हू-सा भारी बोझ और एक बल! इस पर मेरी लड़की और उसके पति का खर्चा पथ की मन्नी ओह!'

ऐसा क्यों मोहनजी ? क्या आपकी लड़की पति ।

सेखर जी ! जिसकी माँ देवी थी जिसके नारीत्व में ओज था जिसके चरित्र का हर अध्याय पूनम के चाँद की तरह उज्ज्वल और निर्मल था, उस की लड़की एक आवारा बंगाली के प्रेम के चक्कर में पड़कर उससे ब्याह करके प्रेम विवाह रचाले और बाद में उसका पति अपने ससुर का जोंक की तरह खून चूसने लगे तो ?

हम दोनों चुपचाप उनकी आँखों की दहकती हुई अंगारों की चमक को देख रहे थे।

उसने मेरा खून चूस लिया, मुझे खोखला बना दिया। मेरी लड़की उसके प्रेम में पागल है और वह निकम्मा दिन भर गधे की तरह खाता है और पड़ा रहता है। अभी भी भीतर ही होगा।

तो आप उसे घर से बाहर ।

'यही तो मैं नहीं कर सकता। मैं बाप हूँ, मैंने अपनी बेटी की जिन्दगी के लिए उसके मनपसन्द साथी से उसका ब्याह कराया। लेखक और भावुक हूँ

'पर पसे ।

मोहन ने अपने हाथ से बच्चों का मुंह बन्द कर दिया और हम सबकी परवाह किये बिना ही वह तीर-सा निकल गया। भीतर से जो उसकी दबी-दबी कर्कश आवाज आ रही थी उससे साफ जाहिर हो रहा था कि वह अपनी बीवी को डांट रहा है और उसकी बीवी पाषाण प्रतिमा सी सुनकर ईंट का जवाब पत्थर से दे रही है। मेरा हृदय बोझिल सा हो गया था। साथी शीलभद्र से कहा—'यहाँ आकर हमने अच्छा नहीं किया। हम यहाँ से चले चलना चाहिए, इसका ऊपरी और घर के बाहर का रूप ही महान् है पर परिवार और घर तो एक नरक से भी ।'

बीच में ही शील बोला—वैसर यह पब्लिसिटी आफिसर है बहुत कमाता है काफी रुपया ।

चुप वह आ रहा है।—हम दोना बिलकुल चुप हो गए।

बाहर धूप चमकने लगी थी। उसकी एक-दो किरणें कमरे में नाचने लगी थीं। हवा एकदम रुक गई थी इसलिए खिड़की के हरे रंग के पर्दे हिलने बिलकुल बन्द हो गए थे।

उसने आते ही अपनी पत्नी की शिकायत की—यह औरत कितनी मूर्ख है साहब टेबल की दराज में पसे पड़े हैं लेकिन आपने खोजने की कोशिश नहीं की और कहलवा दिया कि पसे नहीं हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि मेरी पहली पत्नी बहुत अच्छी थी। उसके लिए एक इशारा काफी था और जब मेहमान आते तब तो वह उन्हें खूब प्रेम से खिलाती पिलाती थी। यह उसको बस शौक सा था। ""हाँ तो मैं क्या कह रहा था ? हाँ! याद आया इस नीरस जिन्दगी में आजकल मुझे कुछ नहीं रुचता। हर चीज से मुझे विरक्ति सी हो गई है। चाहता हूँ, कहीं दूर चला जाऊं ?'

"मैं आपके इस विचार से जरा भी सहमत नहीं हूँ। शीलभद्र हल्के स्वर में गर्जा—'जीवन-संघर्ष से भागना आज के युग का सन्देश नहीं।

फिर मैं क्या करूं ? उसने यह कहकर ऐसी मुद्रा बनाई कि जसे वह कोई गलती कर गया है पर दूसरे ही क्षण उसके हृदय की पीड़ा उसकी आशा लिए

बिना ही चीख पड़ी—'हर माह का खर्च छह सौ रुपए हैं इतने रुपये लाऊँ कहाँ से ? इन फिल्म कम्पनियों का कोई ठीक भरोसा नहीं, अपनी शान की रक्षा तो मुझे किसी तरह करनी ही पड़ती है। लोग मुझे पब्लिसिटी ऑफिसर समझते हैं पैसे वाला समझते हैं पर मैं आजकल बहुत तंगी में हूँ शेखरजी! मुझे आपकी मदद चाहिए। उसकी आँखें मेरे ऊपर जम गई।

आप यह क्या कह रहे हैं ? मोहनजी! मैं तो आपके बच्चे की तरह हूँ मुझे शर्मिन्दा मत कीजिए।'—और वास्तव में मैं शर्म से गड़ गया। मेरी आँखें नीची हो गई। बहुत ही धीमे स्वर में बोला—आप मुझे उपन्यास लिखकर दीजिए मैं उसे छापूँगा। पैसे आपको एडवांस दिला दूँगा।

'अब मैं यही काम करूँगा पर मेरा दिमाग आजकल जरा भी काम नहीं करता शेखरजी। परिवार का इतना सारा कोल्हू-सा भारी बोझ और एक बल! इस पर बड़ी लड़की और उसके पति का खर्चा धंधे की मन्दी ओह!'

ऐसा क्यों मोहनजी ? क्या आपकी लड़की पति ।

शेखर जी! जिसकी माँ देवी थी जिसके नारीत्व में ओज था, जिसके चरित्र का हर अध्याय पूनम के चाँद की तरह उज्ज्वल और निर्मल था, उस की लड़की एक आवारा बंगाली के प्रेम के चक्कर में पड़कर उससे ब्याह कर ले प्रेम विवाह रचाले और बाद में उसका पति अपने ससुर का जोंक की तरह खून चूसने लगे तो ?

हम दोनों चुपचाप उनकी आँखों की दहकती हुई अंगारों की चमक को देख रहे थे।

'उसने मेरा खून चूस लिया, मुझे खोखला बना दिया। मेरी लड़की उसके प्रेम में पागल है और वह निकम्मा दिन भर गधे की तरह खाता है और पड़ा रहता है। अभी भी भीतर ही होगा।

तो आप उसे घर से बाहर ।

'यही तो मैं नहीं कर सकता। मैं बाप हूँ, मैंने अपनी बेटी की जिन्दगी के लिए उसके मनपसन्द साथी से उसका ब्याह कराया। लेखक और भावुक हूँ

इसलिए बेटी के आँसू और उस की तकलीफों की जिन्दगी की कल्पना करके सिहर जाता हू। उसकी भूल मुझसे नई भूल करादे फिर उसमें और मुझमें अन्तर ही क्या रहा ? मैं जानता हूँ कि उसको अपने से अलग करने का यही नतीजा हो सकता है कि या तो वह आवारा मेरी बेटी की चमड़ी पर अपने जुल्म के दाग बनादे अथवा वह उसके अत्याचार से डरकर आत्महत्या करले। वह बड़ा निर्दयी है हृदयहीन है तभी तो मैं चुप हूँ। आप इसे दुर्बलता कहेंगे, मैं इसे स्वीकार करूगा लेकिन आखिर मैं करू क्या ? शेखरजी ! आप मुझे रास्ता बताइए अपना साहित्यिक प्रतिनिधि बनाईए ताकि लोग याद रखें कि यह शेखरजी की देन है।

वह कुछ देर तक मौन रहा। उसकी आँखों में पीड़ा आँसू बनकर छलकना चाहती थी। वह फिर बोला— मैं बहुत दुखी हूँ अपने आप असन्तुष्ट हूँ। अपनी इस स्थिति का हर क्षण मुझे पीड़ाजनक महसूस होता है। जिस कार्य को मैं कर रहा हू उससे मेरी तबीयत मितला रही है। इन वेश्याओं के चित्रों को देखते-देखते मेरे हृदय की भावना भी अब इनसे समझौता करने लगी है। ऐसा महसूस होता है शेखरजी ! जैसे मेरा साहित्यकार मर रहा है पर आप उसे मत मरने दीजिये मत मरने दीजिए।

'मेरा सारा प्रयास उसे जिन्दा रखने में लगेगा। मैं आपकी पुस्तक छापू गा बस आप तुरन्त लिखकर दीजिए। मैंने उससे प्रतिज्ञा सी की।

उसने सान्त्वना की थाह छोड़कर धीरे किन्तु ऐहसान भरे स्वर में कहा— 'आज मुझे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे मुझे नया जीवन मिल गया है। मेरी आत्मा बहुत ही प्रसन्न है। शेखरजी ! आजकल मैं बहुत ही विपत्ति में हूँ। पत्नी की इतनी तंगी है कि कभी-कभी चाय तक का पता नहीं होता है।

जीवन का कठोर सत्य उससे अपनी सत्य परिस्थिति का बयान कर रहा था। वह खुद क्या कह रहा है इससे वह बिलकुल अनजान था।

"आप मुझसे उम्र में बहुत छोटे हैं मेरे बच्चे की तरह हैं पर आपका यह आश्वासन मेरे भविष्य में एक सुखता लाएगा निश्चिन्तता लाएगा।" मैं ऐसा

उपन्यास आपको लिखकर दूंगा जिसमें मानवता की हर पुकार पर मनुष्य की प्रत्येक भावना विसर्जन होती होगी। एक मनुष्य और एक थम का नारा होगा। बस मुझे आपका सहारा चाहिए आजकल मैं बहुत तंगी में हूँ, परेशान हूँ।

आप विश्वास रखें।—हम दोनों उठ खड़े हुए। दरवाजे से बाहर निकलते निकलते मुझे उसने फिर याद दिलाया— आप मेरी बात को नहीं भूलेंगे। आपमें महान् प्रतिभा है। होनहार हैं। मुझे कष्ट के लिए क्षमा कीजिए, फिर आने का कष्ट कीजिएगा। मैं बस अब आपका ही काम शुरू करूंगा। और उसने मुझे छाती से चिपका लिया। उसकी हर धड़कन की आवाज में मैं सुन रहा था—एक आलीशान कमरे मे रहने वाले सफेद बाबू की वास्तविक स्थिति की कम्पन।

मैंने सीढ़ियों में ही धीलभद्र से कहा— यह मोहनजी नहीं बोल रहे हैं, यह इनकी आज की तंगी बोल रही है।

इसके बाद वे जब कभी भी मुझसे मिलते थे त्योंही विचित्र हँसी हँसकर कहते थ— बस आपका ही काम कर रहा हूँ।

एक माह बीत गया।

मैंने इस माह म यह अनुभव किया कि मोहन के मन म वह उमंग और उत्साह नहीं है जो उस दिन था। वह अपनापन नहीं है जिसका एहसास मैंने उस दिन उसकी छाती से लगकर महसूस किया था। और एक दिन मुझे पता चला कि आजकल उसका पब्लिसिंग का धंधा खूब जोरों पर है तो मुझे इन सभी बातों के कारणों का पता लग गया।

मेरे मन म चोट-सी लगी—वह आदमी तो मर गया जो मुझसे एक दिन अपने घर में मिला था। जिसकी आवाज में एक भूखे, एक तंग आदमी का असन्तोष था। जिसके शब्द शब्द में आग जोश और दर्द भाव था। पर यह तो अब मुझसे आँखें चुराता है जैसे मैं उसके जीवन के दुखद क्षणों का हिस्सा बंटा चुका। वह मुझसे फूटी हँसी हँसता जबरदस्ती प्रेम करता है मुझसे दूर भागता है जैसे एक बार अब इसके दिल में बढ़कर इसको सही रास्ते स भटका रहा है।

खून के कतरे

पन्ना तू मेरी गुलाम है दहेज में आई हुई गुलाम गुलाम पर मालिक का पूरा अधिकार होता है तू ज्यादा नखरे करेगी तो इसी वक्त ठिकाने लगा दी जाओगी। इन मजबूत दीवारों के भीतर तुम्हारी चीख भी नहीं सुनी जायेगी।

रात की काली स्याही गाँव पर पूरी तरह छा चुकी थी। सब घरों में अन्धेरा था केवल चेतन बाबा की झोपड़ी में अन्तिम साँस लेता हुआ एक दीपक टिमटिमा रहा था। शायद वह इस बात का प्रतीक हो कि वह अपने स्वामी के जीवन की अन्तिम झलक देख रहा है। केवल ठाकुर के विशाल डेरे के सबसे ऊपरी भाग 'मड़ी' में जहाँ मानवता अश्रुस्राव से आँचल भिगो कर आठना" किया करती थी अभी प्रकाश था। डेरे से थोड़ी दूर यानी उसके मुख्य दरवाजे

के समीप पीपल के पेड़ के 'गट्टे' पर पन्ना बठा ऊँघ रहा था कि ठाकुर ने जोर से पुकारा—पन्ना ! !

माया माई-बाप कह कर वह मढ़ी की ओर झपटा।

+ + +

पन्ना डरे के पीछे वाली कोठरी में बठी-बठी अपने बच्चे हरखू को आंचल से हवा करती, दुलारती एवं उसके प्रश्नों को दुहरा देने का प्रयास कर रही थी, साथ ही उसे सन्तोष भी दिए जा रही थी। अन्त में हरखू प्रश्नों की बौछार के साथ-साथ वह प्रश्न पूछ ही बठा जिसका पन्ना को डर था—'माँ ! मेरे बापू कहाँ हैं ?

'आकाश में बेटा।

आकाश में ? —उसने तुरन्त तकसगत दूसरा प्रश्न किया—'पर माँ आकाश में तो सीढ़ियाँ ही नहीं होती ?

सीढ़ियाँ हैं पर हमें दिखलाई नहीं पड़ती।

क्यों नहीं दिखलाई पड़ती ?

इसलिए कि हम पापी हैं और पापी लोगो को ऐसी अच्छी चीजें दिखलाई नहीं पड़ती।

'माँ ! मैं पापी नहीं हूँ ... मैं तो अभी तक बच्चा हूँ, और माँ मुझे तो तुम भी दिखलाई पड़ती हो। देख यह रही तेरी नाक यह रहा तेरा मुँह और ये रहे तेरे कान—फिर सीढ़ियाँ ही क्या नहीं दिखलाई पड़ती।—बच्चे का प्रश्न मजबूत था। अत माँ अपना बचाव सोचने लगी। वह परेशान-सी हो गयी और उसका परेशान होना भी अत्यन्त स्वाभाविक था क्योंकि बच्चों के अपरिपक्व मन मे तब तक सन्तोष और विश्वास नहीं बठता जब तक उन्हें इतमिनान न हो जाय।

शृगाल ने हुँआ-हुँआ किया। माँ तुरन्त हरखू पर एक फटी धोती डाल कर कहने लगी—सो जा नहीं तो शृगाल उठाकर अपनी गुफा में ले जायगा, तू चुपचाप सोजा'—और वह तुरन्त हरखू के सिर पर स्नेह से हाथ थपथपाती कहने लगी—'ओ रे शृगाल चला जा अब मेरा राजा बेटा सो गया, अब वह

कभी भी बदमाशी नहीं करेगा। हरखू कुछ देर तक तो खामोश रहा फिर तुरन्त बोला— माँ ? भूपाल चला गया अब तू मेरा मुंह क्यों तकती है ? बोल दे न !'

इस बार पन्ना बनावटी रोष से भृकुटी को जरा वक्र करती हुई बोली— 'चुपचाप सोजा वरना थप्पड़ों से तुझे ठीक कर दूँगी । और उसने हरखू के गाल पर चाँटा मार दिया। हरखू सिसक उठा माँ का हृदय आर्द्र बन गया ममता का रूप उसकी आँखों में पूर्णतः छा गया और वह दर्दीले स्वर में लोरी गा उठी''''''मुन्ना अभी एक सो जा रे।'

सो गयी पन्ना !' एक बलिष्ठ राठौड़ी मूछों वाले व्यक्ति ने ताव देते हुए कहा—'चल ! ठाकुर साहब ने तुझे अभी इसी वक्त बुलाया है।

'मुझे !'

'इस वक्त ?

'हाँ हाँ, इसी वक्त और अभी।

'मगर ?'

'मगर-मगर कुछ नहीं जानता। अन्नदाता का हुक्म जो है।

'तो फिर चलो हुक्म तो मानना ही होगा। दोनों चल पड़े।

रात तारों की झिलमिलाती चूनड़ी ओढ़े खामोश थी और पथ उदासीन था। नीरवता को कभी-कभी पाँवों की आहट भंग कर दिया करती थी। पन्ना चलने में तल्लीन थी क्योंकि पगडण्डी कार्य और परिणाम तीनों उससे चिर परिचित थे। अनायास घन्ना व्यथा की दीर्घ श्वांस छोड़ता हुआ बोला ए पन्ना, आज ठाकुर ने बहुत पी रखी है।'

'कितनी ?

बहुत बड़ा ही अटसंट बक रहा है। कहता था—वह नहीं आये तो उसे घसीट कर ले आना आज मैंने बहुत पी ली है। और जब मैं चलने लगा तो उसने इतना भोंड़ा शब्द कहा कि मुझे कहते शर्म आती है और यदि मैं तावेदार न होता तो सच मानो पन्ना, ऐसे जंगली आदमियों का सिर फोड़ देता जो दूसरों की बहू-बेटियों को अपनी बहू-बेटियाँ नहीं समझते हैं।

तभी डेरा आ गया था। धन्ना निश्चित होकर अपने घर में जाकर सो गया और पन्ना डेरे में घुसी। डेरे में इतनी शून्यता थी—जैसे एक युग से यह सुन्दर भवन जीवन के आल्हाद से आबाद था और आज भूत प्रेतों का अड्डा सा बन गया है। डेरे के वह अन्तःपुर याने रावले में पहुँची। ठाकुर मधु की मादकता में मदहोश पड़ा था और पलग पर पड़ा-पड़ा अपना हाथ घड़ी के पेंडुलम की तरह हिला रहा था। वह भी एक कोने में दुबक गई क्योंकि वह जानती थी कि जरा सी आहट और सावधानी पाकर वासना का भूखा सुसुप्त शेर पिशाच बन कर इन्सानियत की लाचार पुतली को नोच-नोच कर खा जायगा, उसे मसल डालेगा और तड़पा तड़पा कर डसेगा। अतः वह निश्चल मौन प्रतिमा की तरह उसी तरह बैठी रही। धीरे धीरे उसके मस्तिष्क का सन्तुलन ठीक हुआ तो वह कांप उठी। अतीत के अमानुषिक अत्याचार से पीड़ित उसका हृदय चीत्कार कर उठा। भय के मारे उसके चेहरे पर पसीने की बून्दें उभर आई और एक एक करके वे फर्श पर गिरने लगीं जैसे उसका मस्तिष्क अपने विचारों को एक चलचित्र की तरह उसके सामने रख रहा हो—

वह दिन भी एक मनहूस मुहूर्त लेकर आया था। मनहूस ऐसे कि उस दिन किसानों पर जुल्म हुआ था उनके खेतों पर कब्जा हुआ और उस रात ठाकुर ने बहुत पी ली थी और पन्ना को वासना की तृप्ति के लिए बुलाया गया था। शराब तेज थी और वासना भी। ठकुराइन—एक गाल (गुलाम) के साथ पिछले कमरे में रंगरेलियाँ मना रही थी—शायद वह भी मजबूर थी क्योंकि ठाकुर को नवीनता चाहिए और वह अब प्राचीन थी—आकर्षण विहीन। पन्ना ने रावले में प्रवेश किया। ठाकुर भूखे कुत्ते की तरह उस पर बिना कुछ कहे सुने ही झपट पड़ा। वह चीखती रही क्रन्दन करती रही मगर कुछ कर नहीं सकी। ठाकुर कह रहा था— पन्ना! तू मेरी गुलाम है दहेज में आई हुई गुलाम और गुलाम पर मालिक का पूरा अधिकार होता है। तू ज्यादा नखरे करेगी तो इसी वक्त ठिकाने लगा दी जायेगी। इन मजबूत और मोटी दिवारों के भीतर तुम्हारी चीख भी नहीं सुनी जाएगी।

'मगर मेरे हरखू का बाप !

'बाप ! पन्ना तेरा यह हठ एक दिन तेरे पति की जान ले लेगा, और हाथी के पाँव के नीचे यदि चींटी कुचली भी गई तो मालूम ही नहीं पड़ेगा। आ तू मेरे पास आ ।'

'नहीं आऊंगी !

'क्यों नहीं आएगी ? पन्ना ! तेरे पति जितना तुझ पर मेरा भी हक है। यदि तुम्हारा पति तेरा बाजू पकड़ कर तुझे सीने से लगा सकता है, तो उसी तरह मैं भी तेरी बाँह पकड़ कर अपनी आग ठण्डी कर सकता हूँ। पास आओ !'

नहीं । और ठाकुर ने झूमते हुए शराब की बोतल के दो टुकड़े कर दिए। वह गरज कर बोला— मैं तेरा अन्नदाता हूँ मालिक हूँ, सब कुछ हूँ और तू मुझसे जिद करती है। इसके बाद ठाकुर ने एक चांटा मारा। एक लात मारी—पन्ना आँखों में आँसू भर कर रोती ही गई। फिर भी उसकी जबान पर उसके पति का नाम था।

प्रभात होते ही एक अर्थी निकली पन्ना के पति की—ठाकुर के ऐश में दीवार बन कर आने वाले रोड़े की। पन्ना चुप थी आय । वह कुछ पगली-सी हो गई थी। जुल्म ने उसकी आवाज पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इसके बाद पन्ना ने कई रातें आबाद कीं और यह आए दिन का कार्यक्रम बन गया था और आज भी।

ठाकुर का हाथ पूर्ववत् हरकत कर रहा था। एकाएक उसकी दृष्टि सामने वाली दीवार पर गई जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण की एक तस्वीर लगी हुई थी—वस्त्र हरण—गोपियाँ अधनग्न उनसे प्रार्थना कर रही थीं, भगवान श्रीकृष्ण खड़े-खड़े मुस्करा रहे थे।

फिर उन्होंने अपनी पैनी निगाह से सूने डेरे की बेजान पत्थर की दीवारों को देखा। पल भर के लिए वे चुप हो गए फिर कहने लगे—'इस पन्ना की खाल न उधड़वा दूं तो मैं ठाकुर नहीं। आधा घण्टा हो गया आया नहीं। कहा था आनाकानी और नखरबाजी करे तो घसीट कर ले आना पर नमक-हराम ।

तो तुम यहाँ हो ?

पन्ना ने केवल हाँ के लहजे म अपना सिर हिलाया ।

कब से ?'

—इस बार भी पन्ना बिलकुल चुप रही ।

मैं पूछता हूँ कि तू कब आई बोलती क्यो नहीं क्या गूँगी हो गई है।
मगर पन्ना ठाकुर की इस गजना पर भी पत्थर सी निश्चल, निष्प्राण मौन रही ।

मेरा गुस्सा आकाश और पाताल को एक कर देता है ?

' ठाकुर साहब । काँपती हुई पन्ना बोली ।

'खसम के मर जाने के बाद तो तू सतवन्ती सीता होना चाहती थी । मगर जरा अक्ल से काम लेकर ऐश की दुनिया बसा लो । मैं ठाकुर हूँ तुम्हारा राजा और एक बड़ा [भुजा पर पहनी हुई बड़ी चूड़ियाँ जो विवाह के वक्त पहनी जाती है] राजा क नाम पर भी पहना जाता है । इसलिए राजा भी तुम्हारा आधा पति है—आओ मेरे पास आओ । " भागती हो डरती हो इसलिए कि आज मैंने बहुत पी ली है—आओ न तुम ऐसे थोड़े ही मानोगी । मेरे विवाह के दहेज म तुम एक गुलाम की तरह दी गई थी और आज गुलाम होकर मालिक का हुक्म न माने । गोली होकर गोलापन न दिखाओ ! ठहरो, लातों के देवता बातों स नहीं मानेंगे । और ठाकुर ने अपनी पशाचिक भुजाओं म नारी को दबोच लिया । यदि परवश नारी के हाथों में आज इतनी ताकत होती तो सामन्ती सभ्यता के इस घिनौने कीड़े को मसल कर रख देती । ठाकुर उसके गालों पर अपनी बबरता क चिह्न छोड रहा था और वह चीख रही थी ।

दुस्सानियत चीख रही थी— बस ठाकुर बस आज बहुत दद है मैं बीमार हूँ—बस । मगर वासना शराब से और भी उन्मत्त हो रही थी और आखिर बिल्कुल खामोश हो गई । किसी प्राणी के महाप्राण सदव क लिए प्रयाण कर गये ।

डेरे में वही शून्यता अंधेरा और चुप्पी । लाश को कस गायब किया जाय ठाकुर यही सोच रहा था । प्रभात, प्रत्यूष की प्रथम रश्मि क साथ लाश को गायब कर दिया गया ।

'मगर मेरे हरखू का बाप !

बाप ! पन्ना तेरा यह हठ एक दिन तेरे पति की जान ले लेगा और हाथी के पाँव के नीचे यदि चींटी कुचली भी गई, तो मालूम ही नहीं पड़ेगा। आ तू मेरे पास आ ।'

नहीं आऊंगी !

क्यों नहीं आएगी ? पन्ना ! तेरे पति जितना तुझ पर मेरा भी हक है। यदि तुम्हारा पति तेरा बाजू पकड़ कर तुझे सीने से लगा सकता है, तो उसी तरह मैं भी तेरी बाँह पकड़ कर अपनी आग ठण्डी कर सकता हूँ। पास आओ !'

नहीं । और ठाकुर ने झूमते हुए शराब की बोतल के दो टुकड़े कर दिए। वह गरज कर बोला— मैं तेरा अन्नदाता हूँ मालिक हूँ, सब कुछ हूँ और तू मुझसे जिद करती है। इसके बाद ठाकुर ने एक चांटा मारा। एक लात मारी—पन्ना आँखों में आँसू भर कर रोती ही गई। फिर भी उसकी जबान पर उसके पति का नाम था।

प्रभात होते ही एक अर्थी निकली पन्ना के पति की—ठाकुर के ऐश में दीवार बन कर आने वाले रोड़े की। पन्ना चुप थी शायद। वह कुछ पगली-सी हो गई थी। जुल्म ने उसकी आवाज पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

इसके बाद पन्ना ने कई रातें आबाद कीं और यह आए दिन का कार्यक्रम बन गया था और आज भी।

ठाकुर का हाथ पूर्ववत् हरकत कर रहा था। एकाएक उसकी दृष्टि सामने वाली दीवार पर गई जहाँ भगवान् श्रीकृष्ण की एक तस्वीर लगी हुई थी—वस्त्र-हरण—गोपिकायें अधनग्न उनसे प्रार्थना कर रही थीं भगवान श्रीकृष्ण खड़े-खड़े मुस्करा रहे थे।

फिर उन्होंने अपनी पनी निगाह से सूने डेरे की बेजान पत्थर की दीवारों को देखा। पल भर के लिए वे चुप हो गए फिर कहने लगे—'इस पन्ना की खाल न उधड़वा दूं तो मैं ठाकुर नहीं। आधा घण्टा हो गया' आया नहीं। कहा था आनाकानी और नखरबाजी करे तो घसीट कर ले आना पर मक्कू हराम ।

'तो तुम यहाँ हो ?'

पन्ना ने केवल 'हाँ' के लहजे में अपना सिर हिलाया ।

'कब से ?'

---इस बार भी पन्ना बिलकुल चुप रही ।

मैं पूछता हूँ कि तू कब आई बोलती क्यों नहीं क्या गूंगी हो गई है।
मगर पन्ना ठाकुर की इस गर्जना पर भी पत्थर सी निश्चल निष्प्राण मौन रही ।

मेरा गुस्सा आकाश और पाताल को एक कर देता है ?'

ठाकुर साहब । काँपती हुई पन्ना बोली ।

खसम के मर जाने के बाद तो तू सतवन्ती सीता होना चाहती थी । मगर जरा अक्ल से काम लेकर ऐश की दुनिया बसा लो । मैं ठाकुर हूँ तुम्हारा राजा और एक बड़ा [भुजा पर पहनी हुई बड़ा चूड़ियाँ जो विवाह के वक्त पहनी जाती है] राजा के नाम पर भी पहना जाता है । इसलिए राजा भी तुम्हारा आधा पति है---आधा मर गया आधा । ""भागती हो डरती हो, इसलिए कि आज मैंने बहुत पी ली है---आओ न तुम ऐसे थोड़े ही मानोगी । मेरे विवाह के दहेज में तुम एक गुलाम की तरह दी गई थी और आज गुलाम होकर मालिक का हुक्म न माने । गोली होकर गोलापन न दिखाओ ! ठहरो लातों के देवता बातों से नहीं मानेंगे । और ठाकुर ने अपनी पैशाचिक भुजाओं में नारी को दबोच लिया । यदि परवश नारी के हाथों में आज इतनी ताकत होती तो सामन्ती सभ्यता के इस घिनौने कीड़े को मसल कर रख देती । ठाकुर उसके गालों पर अपनी बर्बरता के चिह्न छोड़ रहा था और वह चीख रही थी ।

इन्सानियत चीख रही थी---'बस ठाकुर बस आज बहुत दर्द है मैं बीमार हूँ---बस । मगर वासना शराब से और भी उन्मत्त हो रही थी और आखिर बिल्कुल खामोश हो गई । किसी प्राणी के महाप्राण सदैव के लिए प्रयाण कर गये ।

डेरे में वही शून्यता अंधेरा और चुप्पी । लाश को कैसे गायब किया जाय ठाकुर यही सोच रहा था । प्रभात, प्रत्यूष की प्रथम रश्मि के साथ लाश को गायब कर दिया गया ।

'धन्ना का कोई पता नहीं है'—गाँव में एक यही चर्चा थी।

हरखू 'माँ माँ' करता हुआ उठा। धन्ना ने उसे अपनी छाती से लगा लिया। मगर उसकी आकुल आवाज को बन्द नहीं कर सका जो बेचैन थी, केवल एक के लिए, वह थी—'माँ'।

धन्ना चीख उठा—'तुम्हारी माँ डेरे में गई थी, जहाँ इस ठाकर के बच्चे ने उसे नोच-नोच कर मर डाला।

माँ डेरे गई थी। मैं भी जाऊँगा चाचा।

नहीं बेटा वहाँ से लौट कर नहीं आग्रोगे।

कसे चाचा मैं भाग कर आ जाऊँगा परसों भी आया था।

'नहीं बेटा। हरखू रोने लगा। धन्ना ने उसे अपनी किस्मत पर छोड़ दिया।

डेरे के फाटक बन्द थे। हरखू चिल्लाता रहा—माँ माँ माँ। मगर ममता की पुतली माँ माँ होकर अपने जिगर को छाती से नहीं लगा सकी क्योंकि वह तो मर चुकी थी। धन्ना भागा भागा ठाकुर के पास गया और उसने हरखू की जिद् की बात कही तो ठाकुर ने कहा—'तुम अपना काम करो वरना तुम भी ठिकाने लगा दिये जाओगे। धन्ना चला गया।

हरखू दरवाजे से सिर टकराता ही गया और टकराते—टकराते हमेशा के लिए सो गया—अपने खून के कतरों को उस धरती पर बिखेर कर।

—o—

सरहद्

अजीत और नर्गिस। पवित्र प्रेम के प्रतीक। अजीत युद्ध में भी अपने कर्त्तव्य को न भूला। जान की बाजी लगाकर जुल्मी के जुल्म से अबला को बचाया। लेकिन नर्गिस को क्या मिला।

सौन्दर्य जिसकी आत्मा है ऐसे काश्मीर की बर्फ की पर्वत शृंखलाओं पर अस्ताचल की ओर प्रस्थान करते सूर्य की अन्तिम किरणों की पतली पतली अरुणाई चमक रही थी जो ऐसी प्रतीत हो रही थी। जैसे गौर-वर्ण यौवन के मृदुल रक्तिम अधर हों और उसपर उमड़ा हुआ बादल का टुकड़ा ऐसा लग रहा था जैसे यौवन का मदान्ध आसक्त युवक उस पर्वत शृंखला-रूपी सुन्दरी के अधरों को चूम रहा हो। पुरवाई पवन का झोंका बादलों में कुछ कम्पन भर रहा था

और कभी-कभी पवन का इतने जोर का धक्का लगता था कि बादलों के टुकड़े छिन्न भिन्न होकर अस्तित्वहीन हो जाते थे जसे वे अपनी प्रणय-लीला समाप्त कर चुके हों।

ऐसे मनोहर दृश्य को देखने में सलग्न उन पहाड़ी सुकुमार बालाओं का मुख कमल की भांति खिला हुआ था। लेकिन कुछ बालाओं के नयनों म वेदना और विवशता स्पष्ट झलक रही थी शायद उनके मेहमान उनके घर पहुँच चुके थे। उन सबकी आँखों से घृणा टपक रही थी—उन परदेशी मेहमानों के प्रति 'जीवन से खेलने वाल ये परदशी वासना के कीड़े उनके जीवन का मूल्याकन दौलत से करते हैं। कितने जालिम हैं ये परदेशी!' उनकी आँखों की वह वेदना धीरे धीरे जबान पर आने लगी। एक ने हृदय में तूफान को छिपाते हुए कहा—'नसीमा! आज तू तो चन की नीद सोयेगी। तेरे तो कोई मेहमान नही है?

हाँ अख्तर! आज नसीब ने दस रोज के बाद करवट बदली है। जिस्म दुख रहा है अख्तर। ये लोग बड़े बेदद होते हैं।

और बड़े बेवफा भी हैं। इश्क की बातें करके दे जाते धोखा नसीमा!—महबूबा ने जलते हुए दिल से कहा—'सारे लोग कहा करते हैं कश्मीर जन्नत है लेकिन ।

'नहीं महबूबा! हमारा वतन वाकई जन्नत है लेकिन वह औरों के लिये दौलत वालों के लिए। और इस लड़ाई ने हमें और भी तबाह कर दिया। पहले केवल परदेशी थे और आजकल कबाइली लुटेरे भी। ऐसा मालूम होता है कि हमारी किस्मत पर पत्थर पड़ चुका है। हुस्ना ने अपनी पलकों में आँसुओं का ज्वार लाते हुए कहा—काश्मीर पर नहीं जवानों की आँखें कितने पर तबाह करेगी!' यह लाचारी नहीं नफरत की भड़की हुई आवाज थी और हुस्ना चौंक कर बोली मैं एक बात कहना ही भूल गई?

'क्या? नसीमा ने हुस्ना के कधों को पकड़ कर पूछा।

'अजीत पाकिस्तान जा रहा है।

पाकिस्तान! उसने विस्मय से अपने दाँतों के बीच उगुलियाँ दबाकर पूछा—'क्यों?

'नर्गिस को लाने। कह रहा है—नर्गिस बड़ी आफत में है।'

'क्या पागल तो नहीं हो गया है?' नसीमा ने हुस्ना से सलाह भरे स्वर में कहा— सरहद के पास तो सिपाही तनात हैं। उनकी संगीन से बचकर निकलना बड़ा मुश्किल है। जाकर रोकती क्यों नहीं? तभी महबूबा ने अंगुली का संकेत करके कहा— देखो वह जा रहा है अजीत!

अरे सिपाही जैसी वर्दी में! पूरा सिपाही दीख रहा है।

जा 'हुस्ना जा एक बार और जाकर कह न—मत जाओ अजीत वहाँ से बचकर आना बड़ा मुश्किल है।—और हुस्ना भागी एक बार और रोकने पर उसे निराशा से भरे उत्तर के अलावा कुछ भी नहीं मिला।

अजीत कह रहा था—'हुस्ना! नर्गिस की इन्तजारी भरी पलकें काश्मीर से आने वाली सड़क पर लगी होंगी। वह विश्वास के साथ मेरा इन्तजार कर रही होगी। पदा होने वाला नया बच्चा माँ की तड़फड़ाहट म भीतर का भीतर तड़प रहा होगा। मुझे जाने दो ""मुझे कोई नहीं मार सकता मैं इन्सान हूँ। दुनिया की सबसे बड़ी हस्ती!

और वह चल पड़ा हुस्ना की ओर बिना देखे।

पहाड़ियों की सुरम्य घाटियों का उतार-चढ़ाव पथ के सुहाने हृदय मदमाती समीर उसके हृदय को प्रफुल्लित कर रही थी। धुंधला चन्द्र धनुषाकार क्षितिज के समीप थोड़ी दूर नभ में चमक रहा था जो उसके पथ प्रदर्शन म सहायक हो रहा था। कभी-कभी असावधानी से उसके परों में ठोकर लग जाती थी तो गिरता-गिरता सम्भल जाता था। तभी उसे समीप वाले मकान में करुणा भरी चीत्कार सुनाई पड़ी। वह एक पल रुका लेकिन दूसरे क्षण यथार्थता को पहचान कर आगे बढ़ गया। वह जानता था—कोई गरीब बाप अपनी बेटी को मजबूर कर रहा होगा।

तभी उसे नर्गिस का ध्यान आया। और नर्गिस की कोख से पदा होने वाले नवजात शिशु का। नर्गिस उसकी बीवी थी मासूम फूलसी। सौंदर्य जिसको रग रग में समाया हुआ था। आँखों में हमेशा मस्ती छाई रहती थी। वह उसके घर से दूर ऊपर की ओर रहा करती थी। न वह उसे जानता था और न वह उसे।

तभी एक दिन नर्गिस उसके घर घबराई हुई आई। जब अजीत अकेला अपने घर में था। वह चौंककर्सा नर्गिस को देखने लगा और आवाज में एक अज्ञात आकुलता भरकर बोला—'तुम'!

हाँ! शायद तुम्हें ताज्जुब होगा कि मैं यहाँ अकेली कसे? लेकिन घबराओ नहा सारी बातें अभी बतलाए देती हूँ। वह खामोश किंकर्तव्यविमूढ़सा खड़ा रहा। न कुछ बोला और न कुछ हिला। निश्चल नि"।" तभी नर्गिस आँखों को आँसुओं से भरती हुई बोली—'हम गरीब हैं। इतने गरीब कि दो जून रोटी भी अच्छी हालत में नसीब नहीं होती। तभी हमे अस्मत का सौदा करना पड़ता है। इस पेट के लिए अजीत! उन मर्दों से प्यार करना पड़ता है जिनके पास बठने की तबियत नहीं होती है। खर! आज आज एक ऐसा मेहमान आया है जिसके शरीर पर कोढ़ है। अजीत! मुझ उससे नफरत है दिली नफरत। उस बूढ़े खूसट को देखकर मेरा जी मरने को चाहता है। मुझे बचालो। आज उस राक्षस स बचालो! मेरा दिल तुम्हें दुआ देगा।

अजीत कुछ देर खामोश रहा। फिर प्रश्नकर्त्ता की भाँति बोला— लेकिन कसे?

किसी भी तरह!

किसी भी तरह? लकिन तुम जानती हो कि मेरा यहाँ की लड़कियों के साथ कसा सम्बध है?

जानती हूँ तुम हर एक को अपनी बहन समझते हो और शादी क पहले हर इन्सान का औरों की लड़कियों स ऐसा ही रिश्ता रखना चाहिए लकिन

फिर?

'मुझे आज रात भर के लिए कहीं छुपालो। मैं तुम्हारी बड़ी मेहरबानी समझूँगी।

और व दोनों उस रात मोटा कम्बल लकर कहीं चले गए।

सवेरा हुआ तो नर्गिस घर लौटी। नर्गिस के भाई ने क्रोधित होकर पूछा—

'कहाँ गई थी? मेहमान तुम्हारा इन्तजार करता रहा।

'मेरे सवाल का जवाब दो ! उसने अपनी आँखों को तरेर कर कहा।

मैं तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं दे सकती।

नर्गिस ! हद से आगे न बढ़ो। मेरे सवाल का जवाब दो। रात भर कहाँ रही थी ?

अजीत के साथ ?

क्यों ?

'यों ही।

देख लूँगा। इस खंजर से जब तक सिर न उड़ा दूँगा तब तक चैन नहीं लूँगा। सूअर के बच्चे ने समझ क्या रखा है ? दाँतों को पीसता हुआ नर्गिस का भाई मिर्जा बोला।

ख्वामख्वाह किसी पर गुस्सा निकालना जायज नहीं है'—लापरवाही से बोली वह– उसने भी तो फीस दी है। यह लो रुपये'—और नर्गिस ने अपनी संचित की हुई सारी पूँजी मिर्जा के हवाले कर दी। मिर्जा गुस्से से काँपता हुआ भीतर चला गया।

इसके पश्चात् नर्गिस हमेशा अजीत के यहाँ आने लगी। और एक दिन मिर्जा को मालूम हुआ कि उन दोनों ने शादी भी कर ली है। लेकिन उसका गवाह कोई नहीं था।

जब हिंदुस्तान का बटवारा हुआ तो मिर्जा कुछ दोस्तों की सहायता से उसे पेशावर के समीप एक गाँव में ले गया और अजीत को तब पता चला जब उसके दोस्त ने नर्गिस का एक पत्र उसे लाकर दिया और आज वह फिर पत्र पाकर नर्गिस को लेने के लिए चल पड़ा—मौत की बाजी लगाकर।

+ × +

दोनों देशों की सरहद समीप आ रही थी। अतः अजीत पूरी तरह सजग और सचेत हो गया। वह अपनी राइफल में गोली भरकर चट्टानों की आड़ में छिपता छिपता पाकिस्तान की सीमा में घुसने का प्रयास कर रहा था। एकाएक गोली छूटने की आवाज आई। वह दौड़कर एक चट्टान के पीछे छिप गया। हाथ और पैर से पसीना छूटने लगा। अतः उसे वर्दी से हाथ पोंछने पड़े।

हवाएं नर्गिस के आंचल को कभी-कभी उड़ा देती थीं। वह अजीत की गोद में पड़ी थी। उसने अजीत के मुंह को अपनी हथेलियों में पकड़कर कहा, तुम्हें यहाँ अकेले आते डर नहीं लगा।

'नहीं।

'क्यों ?'

'तुम्हें जो पाना था। नर्गिस मैं तुम्हारे बिना जिंदा नहीं रह सकता। मेरी जिन्दगी तुम्हारे बिना न मिटने वाली दर्द भरी तनहाई है। उस तनहाई के लम्हों को गुजरते गुजरते मैं अपने होशोहवास खो बैठता हूँ। तुम्हें क्या पता मैंने किस तरह ये दिन गुजारे हैं।

नर्गिस फफक कर रो पड़ी।

'तुम रोती हो ?'

'अजीत यहाँ मैंने जसी जिन्दगी गुजारी है उसकी याद भर से रोना आ जाता है। मिर्जा ने मुझ पर कैसे कैसे जुल्म किये हैं मैं तुम्हें कभी फुर्सत से बताऊँगी।'

'और तो सब ठीक है न ?

'हाँ।

देखो अब हमें चलना चाहिए।

'पर सरहद।

'सरहद की फिकर न करो। मैं सब रास्ते जानता हूँ।

'कहीं मिर्जा और सुलेमान।

'अरे पगली। देखती नहीं तेरे अजीत के हाथ में दुनाली बन्दूक है। गोलियों से भून दूंगा। तुम नहीं जानती कि इस बन्दूक ने कितने कबाइलियों को मारा है। चलो।

वे दोनों घाटी के कुछ ऊपर आये। दूर बाईं तरफ कुछ मशालें जल रही थीं। अजीत ने राहत की साँस लेते हुए कहा 'सच, हम बड़े नसीब वाले हैं। हमारे दुश्मन राह भटक गये हैं।

आगे रात सांय सांय कर रही थी।

नर्गिस के पाँव में ठोकर लगी और हल्की चीख भर कर वह बोली धीरे चलो न।

यहाँ का पानी पीते पीते तू बड़ी कच्ची हो गई है।

हाँ यहाँ का पानी अच्छा ही किस लगता है।

फिर चल। अपने देश में पहुँचते ही तुम्हे वहाँ का पानी जी भर कर पिलाऊंगा।'

यत्।

थोड़ी दूर चलने पर व दोनो बिलकुल खामोश हो गये।

सरहद आ गई थी। वे सम्भलकर हिन्दुस्तान की सरहद म घुसने लगे। उन दोनों की अज्ञात भय से साँसें रुक गई थीं। शरीर मे पसीना छूटने लगा था। जसे कोई दुघटना घटने वाली हो।

वे दोनों चोरी छुपे जसे ही हिन्दुस्तान की सरहद मे घुसे बस ही कुछ आत तायी कबाइलियो ने हिन्दुस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाये। अजीत सँभल गया। तभी एक स्त्री के रोने का स्वर सुनाई पड़ा।

'मुझे बचाओ मुझे बचाओ।

'नर्गिस लगता है कोई वहशी किसी औरत की इज्जत स खेल रहा है।'

'तुम चुप रहो।

नही नर्गिस जिस तरह मैं तुम्हें उन दरिन्दों क हाथ से बचाकर लाया हू उसी तरह मैं ""।

देखो अजीत तम अकेले हो।

तभी औरत का करुण क्रन्दन और करुण हो गया। मुर्दाबाद क नारे भी बढ गये। 'हिन्दुस्तान मुर्दाबाद हिन्दुस्तान मुर्दाबाद' अचानक अजीत किसी दवी साहस के वशीभूत होकर चिल्ला पड़ा नही नहीं हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। और वह नर्गिस को छोड़कर उस ओर लपका। वह आदमी किसी औरत का लेकर भाग रहे थे। अजीत आकाश में गोली मार कर गर्जा ठहरो तम सब मेरे साथियो से घिर गये हो। गोली मत चलाना वर्ना सब भून दिए जाओगे। छोड़ो इस औरत को!

कोई पन्द्रह-सोलह वर्ष की लड़की थी। भाग कर अजीत के पास आ गई। अजीत ने उसे धीरे से कहा—'भागो भागो'। वे दोनों भागे। उनके कदमों की आवाज सुनकर कबाइली सजग हुए। गोलियाँ चली। अन्धेरे में अनुमान से निशान बाँधे गये। अजीत ने भी मोर्चा बाँध लिया। गोलियों की आवाज सुन कर हिंदुस्तानी सिपाही भी आ गये। तीन कबाइली मारे गये और मारा गया अजीत ? उस समय वह अपहृता नर्गिस की छाती से लिपटी हुई थी।

गोलियों की बौछार के बीच नर्गिस कह रही थी, 'मेरा अजीत खुदा है। वह किसी की अस्मत लुटते नहीं देख सकता। आह ! देखो वह अपने देश की एक लड़की के लिए जान की बाजी लगाकर गोलियाँ छोड़ रहा है। लड़ाई खत्म होने दो तब उसे देखकर बड़ी खुश होगी। वह बहुत अच्छा है। और गोलियाँ चल रही थीं।

—०—

अलगोजा का जादू

> और वह भी खो गई—उसकी लय में।
> वह हाँ वही तो जिसने भोलू को इसलिए
> अपना प्रेमी चुना कि वह कुबड़ा-लंगड़ा
> और कुरूप होने पर भी अलगोजा का राजा
> ही नहीं, बल्कि अलगोजा का सम्राट है।

जब धमनी को झुलसा देने वाली धूप में धनी संसार खस की टट्टियों की आड़ में गुदगुदे गद्दों पर मधुर सपन देखा करता है तब वह छेनी और हथौड़ा लिए चिलचिलाती धूप में चट्टान तोड़ा करता है। कठिन श्रम से उसका शरीर पानी-पानी हो जाता है आँखों में जलन होने लगती है और निरंतर हथौड़े का प्रहार करते करते उसके हाथ शिथिल हो जाते हैं फिर भी उसे अपने जीर्ण चिथड़े से जो उसके सिर पर बँधा रहता है पसीना पोंछकर काम करना पड़ता

है। इसके बाद वह उन चट्टानों को ठेकेदारों के हाथ सौंप कर घर चला जाता है। बस उसकी यही दिनचर्या है—नीरस, पीड़ित और दुखी।

वह दुबला है, किन्तु सारे गाँव का कहना है कि उसकी ताँत बड़ी करारी है—मजबूत है। उसके कंकाल मात्र तन को देखकर चौधरी हुकुमराम कहा करते हैं— भीखू बड़ा तगड़ा है उसके शरीर में जान है, फुर्ती है। उसने एक बार घीसा पहलवान को भी पछाड़ दिया था।

आज भीखू ३० साल का है लेकिन माता पिता के अभाव में वह आज भी कुँवारा है। उसके जीवन में नीरसता है। कठिन श्रम के बावजूद भी भर पेट रोटी न मिलने पर उसके अधरों पर आज तक किसी ने भी मुस्कराहट नहीं देखी। उसके पास न रहने को अच्छी झोंपड़ी है न पहनने को वस्त्र और न खाने को अच्छा खाना।

लेकिन भीखू दुख के क्षणों में जीवन का क्षणिक आनन्द लेने के लिए उसी चट्टान पर संध्या बैठकर 'अलगोजा' बजाया करता है जिसकी मधुर ध्वनि ने तमाम गाँव को मोह रखा है। यही वजह है कि लोग उसे अलगोजा का राजा कहते हैं।

\+ \+ \+

सूरज अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा था। क्षितिज में डूबते सूर्य की रश्मि अधिक रक्ताभ हो उठी थी। चट्टान के अर्धक्षीण प्रस्तर उन रश्मियों का निस्तेज होता हुआ क्षणिक प्रखर प्रकाश पाकर नयनों को सम्मोह रहे थे। भीखू अचल बैठा अनिमेष दृष्टि से सृष्टि की इस सुन्दर सृष्टि का रसास्वादन कर रहा था। मन की भावनाएँ सुखद कल्पना करते-करते आत्मविभोर-सी हो गयीं और सहसा अलगोजा अनजान म हो उसके अधरों से जा लगा। गीत मधुर स्वर में गूँज पड़ा। सारा वातावरण रसीले स्वर से प्रतिध्वनित हो उठा। समीप में काम करने वाले युवक और युवतियों के चलते हाथ शिथिल हो गये और उन का सारा ध्यान भीखू की तन्मयता म खो गया।

और वह भी खो गई—उसकी लगन में। यह वही थी जिसने भीखू को इसलिए अपना प्र मी चुना कि वह दुबला, निबल और कुरूप होने पर भी अल

गाजा का राजा नहीं—बल्कि अलगोजा का सम्राट है।

वह खड़ी रही मात्र मुग्ध सी—अपना सर्वस्व विस्मृत करके। यकायक भीखू की दृष्टि उस पर पड़ी अलगोजे का मधुर स्वर इस तरह रुक गया जैसे अपनी चरम सीमा पर पहुँच वीणा के तार यकायक टूट जाते हैं।

वह काँप उठी। भीखू मौन रहा।

और बजाओ भीखू बन्द न करो! यह मुझे बड़ा मीठा और चोखा लगता है।—उसका हाथ भीखू के तन से स्पर्श कर रहा था।

' ""। —भीखू केवल अलगोजे को निहारता रहा।

'नहीं बजाओगे ?

'नहीं ।

'क्यों ?

स्वर खो गया लय सन्देह में पड़ गई।—एक दार्शनिक की भाँति बोला भीखू।

'मेरे आने से ?

'शायद।

'तो तुम मुझसे इतनी घृणा करते हो ?

'नहीं घृणा तो नहीं करता लेकिन दुनिया से डरता हूँ। यह दुनिया बड़ी विचित्र है खड़े हुए को हँसती है और बैठे हुए को भी। इसलिए मेरा चुप हो जाना ही बेहतर है—और जरा तुम भी सोचो तो तुम विधवा हो मैं कुँवारा हूँ और फिर भी हम दोनों जवान हैं । हमारे बारे में लोग क्या-क्या सोच सकते हैं यह तुम जानती हो ?

'पर भीखू मेरे भी अरमान हैं मैं भी औरत हूँ। जरा सोचो हर रात हर जवान दिल दूसरे जवान दिलसे कुछ कहता है। फिर क्या मैं ।

मैं तुम्हारी मजबूरी जानता हूँ लेकिन समाज के बन्धनों को नहीं तोड़ सकते उसके लिए एक समूह की आवश्यकता है अन्यथा हमारा यह क्रान्तिकारी कदम वासना का ढकोसला मात्र रह जायगा।

उसके हाथ अनायास ही अधरों की ओर उन्मुख हुए। लगी सब कुछ

है। इसके बाद वह उन चट्टानों को ठेकेदारों के हाथ सौंप कर घर चला जाता है। बस उसकी यही दिनचर्या है—नीरस पीड़ित और दुखी।

वह कृषकाय है किन्तु सारे गाँव का कहना है कि उसकी ताँत बड़ी करारी है—मजबूत है। उसके कमाल मात्र तन को देखकर चौधरी हुकुमराम कहा करते हैं— भीखू बड़ा सख्त है उसके शरीर में जान है फुर्ती है। उसने एक बार घीसा पहलवान को भी पछाड़ दिया था।

आज भीखू ३० साल का है लेकिन माता पिता के अभाव में वह आज भी कुँवारा है। उसके जीवन में नीरसता है। कठिन श्रम के बावजूद भी भर पेट रोटी न मिलने पर उसके अधरों पर आज तक किसी ने भी मुस्कराहट नहीं देखी। उसके पास न रहने को अच्छी झोंपड़ी है न पहनने को वस्त्र और न खाने को अच्छा खाना।

लेकिन भीखू दुख के क्षणों में जीवन का क्षणिक आनन्द लेने के लिए उसी चट्टान पर संध्या बठकर 'अलगोजा' बजाया करता है जिसकी मधुर ध्वनि ने तमाम गाँव को मोह रखा है। यही वजह है कि लोग उसे अलगोजा का राजा कहते हैं।

+ + +

सूरज अस्ताचल की ओर प्रस्थान कर रहा था। क्षितिज में डूबते सूर्य की रश्मि अधिक रक्ताभ हो उठी थी। चट्टान के मर्दाणिम प्रस्तर उन रश्मियों का निस्तेज होता हुआ क्षणिक प्रसर प्रकाश पाकर नयनों को सम्मोह रहे थे। भीखू अचल बैठा अनिमेष दृष्टि से सृष्टि की इस सुन्दर सृष्टि का रसस्वादन कर रहा था। मन की भावनाएँ सुखद कल्पना करते-करते आत्मविभोर-सी हो गयीं और उसका अलगोजा अनजान में ही उसके अधरों से जा लगा। गीत मधुर स्वर में गूंज पड़ा। सारा वातावरण रसीले स्वर से प्रतिध्वनित हो उठा। समीप में काम करने वाले युवक और युवतियों के चलते हाथ शिथिल हो गये और उन का सारा ध्यान भीखू की तन्मयता में खो गया।

और वह भी खो गई—उसकी लगन में। वह हाँ वही था जिसने भीखू को इसलिए अपना प्रेमी चुना कि वह दुबला निबल और कुरूप होने पर भी श्रम

गोजा का राजा नहीं—वल्कि अलगोजा का सम्राट है।

यह खड़ी रही मन्त्र मुग्ध सी—अपना सवस्व विस्मृत करके। यकायक भीखू की दृष्टि उस पर पड़ी अलगोजे का मधुर स्वर इस तरह रुक गया जैसे अपनी चरम सीमा पर पहुँचे वीणा के तार यकायक टूट जाते हैं।

वह काँप उठी। भीखू मौन रहा।

और बजाओ भीखू बन्द न करो। यह मुझे बड़ा मीठा और भोला लगता है।—उसका हाथ भीखू के तन से स्पर्श कर रहा था।

""।—भीखू केवल अलगोजे को निहारता रहा।

'नहीं बजाओगे?

नहीं।

'क्यों?

स्वर खो गया लय सन्देह में पड़ गई।—एक दार्शनिक की भाँति बोला भीखू।

'मेरे आने से?

शायद।

'तो तुम मुझसे इतनी घृणा करते हो?

'नहीं घृणा तो नहीं करता लेकिन दुनिया से डरता हूँ। यह दुनिया बड़ी विचित्र है खड़े हुए को हँसती है और बैठे हुए को भी। इसलिए मेरा चुप हो जाना ही बेहतर है—और जरा तुम भी सोचो तो तुम विधवा हो मैं कुँवारा हूँ और फिर भी हम दोनों जवान हैं। हमारे बारे में लोग क्या-क्या सोच सकते हैं यह तुम जानती हो?

'पर भीखू मेरे भी अरमान हैं मैं भी औरत हूँ। जरा सोचो हर रात हर जवान दिल दूसरे जवान दिल से कुछ चाहता है। फिर क्या मैं।

मैं तुम्हारी मजबूरी जानता हूँ लेकिन समाज के बन्धनों को नहीं तोड़ सकते उनके लिए एक समूह की आवश्यकता है अन्यथा हमारा यह क्रान्तिकारी कदम वासना का ढकोसला मात्र रह जायगा।

उसके हाथ अनायास ही अधरों की ओर उन्मुख हुए। लखी सब कुछ

भूल कर कह उठी—'बजाओ बजाओ न भीखू !'

तुम गाँव को भूल जाती हो लखी।

'हाँ लेकिन गाँव मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। वह घर का दावेदार है कर्जदार है ?'—उसने एक नई युक्ति पेश की।

और तुम्हारा भाई ?

वह भी कुछ नहीं कर सकता। लखी अपनी अलग हस्ती रखती है। भाई की ये कोठियाँ लखी की पूंजी पर खड़ी हैं। मेरे ससुराल का सारा माल इन लोगों ने हड़प रखा है समझे।

इस उत्तर पर भीखू चुप हो गया। वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि आखिर लखी उसे इतना क्यों चाहती है ? उसमें इतनी क्या खूबी है ? लेकिन वह अपने दिल से एक भी सन्तोषप्रद उत्तर नहीं पाता था। गरीबी से अकड़ी उसकी हड्डियाँ आज अनायास ही उसे झकझोर रही थीं शायद कह रही थीं—'लखी तुझे चाहती है।

और भीखू भी लखी को चाहता था। चेतन मन से भले ही वह इस निर्णय पर न पहुंच सका हो लेकिन अचेतन में उसके मनकी हर तन्त्री उसे इस बातको मानने के लिए बाध्य करती थी कि तू लखी को चाहता है लखी को प्यार करता है।

इसी आन्तरिक द्वन्द्व में वह कुछ देर तक खो गया।

एक मन ने प्रश्न किया—'क्या बात है ?

दूसरे मन ने उत्तर दिया— वर्ग विषमता।

भीखू ने तुरन्त जान लिया—गरीब-अमीर का मेल बिना पंखों की बरा बरी हुए नहीं हो सकता। यह असम्भव है बिल्कुल असम्भव है।

क्या सोच रहे हो ?

चौंक पड़ा भीखू—'कुछ नहीं सोचता हूँ ज्ञान का उपार्जन करके भी मैं गाँव में क्यों पड़ा हूँ ? शहर क्यों नहीं चला जाता। लेकिन मास्टर दबेलाराम को दिये हुए वचन याद आ जाते हैं कि इस दुनिया को छोड़ कर और कहीं न जाऊंगा। वही यहाँ आने नहीं देते अन्यथा मैं कभी का ही शहर चला जाता।

वहाँ किसी दफ्तर में काम कर सकता या चाय बगान में मजदूर हो जाता तन-ख्वाह भी अच्छी मिलती और मजा खूब रहता।

फिर चला क्यों नहीं जाता ? हल्का रूखापन उसकी आवाज मे था।

चला जाता लेकिन गुरु की आज्ञा का ध्यान और इन मजदूरों का ख्याल जाने नही देता।—उसकी आँखों में वेदना की क्षीण रेखाएं छा गयीं।

और मेरा ?—तपाक से पूछा लखी ने।

तेरा सच कहूँ या झूठ ?

सच'

'नहीं आता हाँ कभी-कभी तेरी उच्छृ खलता देखकर तरस आता है ?

और, मैं तेरे पीछे बदनाम हो रही हूँ। लखी आँखें तरेर कर बोली।

"मैंने कभी तुझे बुलाया तो नहीं ?

मैं ही हूँ नीच कमीनी गई-बीती। उसके रोष म प्रगाढ़ अपनत्व झमक रहा था। स्थिर पलकें जसे कह रही थीं—'तुम पत्थर दिल हो कृपण हो कठोर हो। एकाएक भड़कती हुई बोली—'तेरे पीछे पीछे पूँछ की तरह घूमती रहती हूँ। भीखू मेरा साथ दे दो मालामाल कर दूँगी।

'मास्टर जी भी अक्सर कहा करते हैं कि पूजी के युग म हर वस्तु हर भावना हर विचार एक व्यवसाय हो गया है उसे वही खरीद सकता है जिसके पास पसा हो। तेरे पास पसा है तू मुझे खरीद सकती है किन्तु अपना नहीं सकती।

'भीखू ! क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ ?

भीखू चुप रहा जसे वह इन फालतू प्रश्नों का उत्तर देकर अपना समय बरबाद करना नहीं चाहता। लेकिन लखी उसे हृदय स चाहती थी उस हृदय से जिसकी हर धड़कन में उसके बचपन की स्मृतियाँ अठखेलियाँ किया करती थीं। उसे याद आई वह घड़ी जब लखी छोटी थी—नन्ही मुन्नी। भीखू चा-चपल और नटखट। एक दिन भीखू ने कान में बात कहने के बहाने लखी को काट लिया था। लखी चीख पड़ी थी। भीखू डर रहा था। धीरे धीरे समीप आता हुआ बोला—'तू किसी से न कहना मैं अब कभी ऐसा नहीं करूँगा सच

कहता हूँ नहीं करूंगा जो कान पकड़ता हूँ। बस लखी हंस पड़ी। भीखू को क्रोध आ गया। इसलिए कि उसकी करुणा पर वह हंसी क्यों।

पुरानी याद उस घाव की तरह सताने लगी जो ऊपर से अच्छा हो गया था पर भीतर एक असह्य पीड़ा लिये हुए था। लखी भीखू से पूछ उठी— तुम्हें वह दिन याद है जब तुमने मुझे काटा था।

नहीं।

भीखू—चीख पड़ी लखी।

भीखू अलगोजा देख रहा था।

इतनी उपेक्षा अच्छी नहीं।

लखी हर रोज का माथा खाना अच्छा नहीं। मैं सच कहता हूँ कि तेरा मेरा प्यार सफल नहीं हो सकता। यदि तू मुझे ही चाहती है तो विवाह कर ले।

विवाह होना असम्भव है।

तो तू मुझे सांड की भांति बांध कर रखना चाहती है। ताव में आ गया भीखू।

लखी बिल्कुल चुप रही।

पर्वत पर तिमिर आच्छादित होने लगा था। निराशा दृष्टि फेंकते हुए भीखू गुर्राने लगा– मैंने तुझे कह दिया तेरा मेरा जायज सम्बन्ध नहीं हो सकता तू मुझे फांसना चाहती है अपनी आबरू मिटाना चाहती है।

उसके कदम बस्ती की ओर बढ़ रहे थे। लखी चोट खा नागिन की भांति फुफकारती दूसरी पगडंडी की ओर चली जा रही थी। जब एक दूसरे की आंखों से ओझल होने लगे तो लखी का टूटता हुआ स्वर सुनाई पड़ा— मेरे साथ रहेगा तो स्वर्ग का आनन्द लूटेगा।

+ + +

एक गुरुत के निर्माण को लेकर लखी के भाई चेतन प्रसाद और मजदूरों में संघर्ष प्रारम्भ हो गया। मजदूर लोग वेतन बढ़ोती चाहते थे और चेतन प्रसाद कटौती। कटौती नहीं तो बढ़ोती भी नहीं। संघर्ष ने विकट समस्या का रूप धारण किया। हड़ताल प्रारम्भ हो गई। मजदूरों की ओर से मास्टर रवेगराम

और भीखू प्रतिनिधित्व करते थे और चेतन प्रसाद की ओर से भाड़े के सब्जों टट्टू। धीरे धीरे सघप की सफलता का पलड़ा सचाई की ओर झुकने लगा। जरदाई छाये हुए गरीब इन्सानों के चहरों पर प्रसन्नता की लहरें छाने लगी।

भीखू अपने खण्डहर में लगे टूटे शीशे के आगे खड़ा-खड़ा अपने चेहरे को निखार रहा था। शीशे को देखकर इस बात का अनुमान लगाया जा सकता था कि वह किसी ठाकुर के आदम कद शीशे का टुकड़ा है जिसे भीखू के बुजुर्गों ने लाकर इस दीवार में चिपका दिया है। भीखू अपने चेहरे की पर्यवेक्षक-दृष्टि से देख रहा था—मसा वाले आखिर हार ही गये अब हम सब मजदूरों को अपनी लड़ाई का मेहनताना मिलेगा, इस खुशी पर मैं हीर को मगनी का नाच कराऊंगा। बहुत अच्छा गाती है। उससे वह गीत जरूर गवाऊंगा—

आज तो भवरी रो कावो

कन्दोई रे चाल्यो

म्हांने लाडू भुजिया भावे—

ओ भँवरी रा कावो'

एक काल्पनिक सुख विचारोंमें डूबता हुआ भीखू आत्मविभोर-सा हो गया। कभी-कभी न जाने वह अपनी पलकें क्यों बन्द कर लेता था? कभी मस्ती म झूमन-सा लगता था।

'खट खट खट'—किवाड़ खटकने की आवाज आयी। भीखू चौंका। देखा—उदास मन लखी खड़ी है—श्वेत झीनी धोती पहन एक अनोखे अन्दाज में।

तुम?

'हाँ भीखू आज मैं तुझ से एक बहुत बड़ी भीख माँगने आई हूँ।

'मास्टर जी कहा करते हैं—ये मसे वाले अपने स्वार्थ के लिए गरीब के पाँवों में दस बार गिरकर अपनी नाक रगड़ सकते हैं।

'तू तो हर बात पर कान्ने गोड़ता है।—लखी क दोनों हाथ भीखू क तन से स्पर्श करने लगे। उसकी आँखों में छलकती हुई मदिरा में बहयायी नशा नाच

नया सूरज

गुलाम का दर्द कोई नहीं जान सका,
स्वतन्त्रता के पुजारी भी नहीं। क्रान्तिकारी
व्याख्याएँ भी नहीं। बदना भी राजस्थानी
सामन्तों के रावले की ऐसी ही गुलाम थी।

ठकुराइन और बावड़ी !

दोनों औरतें एक सी, पंचतत्त्व की बनी चलती-फिरती लाशों को चलती थमने वाली।

ठकुराइन का चेहरा हवेली की शान और सम्पत्ति के दंभ पर गर्वित है और दासी का चेहरा सौम्य और शान्ति से मनमोहक लग रहा है।

एक का तन भोग विलास की अधिकता के कारण दिन प्रतिदिन पुकारे

की तरह फूल कर स्थूल होता जा रहा है और दासी का बदन कड़ी मेहनत के बावजूद भी गठीला और चपल होता जा रहा है।

ठकुराइन का नाम है तारा और दासी का नाम है बदना।

+ + +

बन्ना तारा के दहेज में आई गोली है, डावड़ी है। अमूल्य गहनों के साथ मनुष्य को दहेज में देने की प्रथा रवीन्द्र, तुलसी और राम के देश की है। बदना सारे रास्ते रोती रही। उसके आँसू सावन भादों की बूंदें बन गए रुकते ही नहीं। अश्रु प्रभाव से उसके कपोलों पर जलन सी होने लगी।

डेरे में कदम रखा तो उसे पहले-पहल विचित्र अनुभव हुआ। पहले की डावड़ियों ने उसे सन्देह की दृष्टि से देखा। एक अजीब सी नजर से घूरा। एक ने व्यंग के नंगे शब्दों में कहा– ठाकुर सा' इस बार हलुवा ले आए हैं, दाँतों से काटेंगे बेचारी को।

बदना सिहर उठी!

वह भोलेपन से एक डावड़ी की ओर देख कर सशंकित स्वर में रुकती-रुकती बोली—'क्या ठाकुर सा राक्षस हैं? वे मिनख को कैसे खा जाते हैं?

एक डावड़ी ने मुस्करा कर उसके गाल पर हल्की सी चपत लगा कर कहा— ऍ! तू पन भी कँवली छोरी अभी तू नादान है। मुझे भी उस समय बड़ा अचरज हुआ था पर होते-होते मैं सब समझ गई।.....मैं अनसी नहीं देखो ये जितनी भी काम-काज कर रही हैं सबकी सब मिनख.....।

यह डावड़ी हँसी फिर गुनगुनाती चली गई।

+ + +

दूसरे दिन से बन्ना ने जो सुकुमार सी कोमल और बचपन सी अनजान थी यह जानना प्रारम्भ किया कि आदमी राक्षस कैसे बनता है? उसने देखा कि उसकी इच्छा का कोई महत्व नहीं। ठकुराइन बीमार है तो उसे भी बीमार होना पड़ रहा है। ठकुराइन बहती-उठ। यह उठ जाती है। बठ, वह बठ

जाती है। मदारी के बन्दर सा उसका जीवन है और इस पर मार-पीट ऊपर से। लाता घूसा का महाप्रसाद अलग से।

धीरे धीरे बदना के मस्तिष्क में विचार घर करने लगे। मार खाते-खाते बदना का शरीर मार प्रूफ बन गया। एक विद्रोह मिश्रित ढिठाई उसके मन में घर करने लगी और एक दिन उसने तय किया—जिन्दगी में कड़ी मेहनत के बाद भी जूते ही मिलते हैं ठाकुर के रावले की शोभा बन जाने पर भी झिड़कियाँ खानी पड़ती हैं तब फिर क्यों हुक्म माना जाय! केवल हड्डियाँ ही तोड़ाई जाय।

उस दिन से बन्ना के मस्तिष्क में विद्रोह की भयंकर प्रतिक्रिया हुई।

+　　　　　　+　　　　　　+

ठकुराइन ने जोर से चिल्लाकर हुक्म दिया—बन्ना! पानी ला।

बदना ने मुँह सिकोड़ कर फटे स्वर में कहा—ठकुराइन सा' मैं लकड़ियाँ तोड़न आती हूँ।

मैं कहती हूँ कि पहले पानी ला।'

बन्ना इमाड़ी से उत्तर दिए बिना बाहर चली गई। ठकुराइन जल के खाक हो गई! चील सी पड़ी, 'टके की डावड़ी होकर जुबान लड़ाती है रांड के शरीर पर डाँम चिपका दूंगी।

बन्ना क्रोध में जलती हुई आँखों से ठकुराइन को चुपचाप घूरने लगी।

बोलती क्या नहीं!

। पत्थर की भाँति निश्चल।

तेरी जबान के ताला लग गया है क्या मालजादी?

फिर भी चुप।

तो हरामजादी को अभी बोलना सिखाती हूँ। कह कर ठकुराइन ने बन्ना को पीटना प्रारम्भ कर दिया। जब मारते मारते हारा थक गई तो लकड़ी को फेंकती हुई बन्बड़ा उठी—लुगाई है या पत्थर की देवली लकड़ी भी लगती नहीं। मैं मारती-मारती थक गई और यह मार खाती जाती थकी ही

नही। कसी जानवर है ?

तारा के यक जान क बा बन्ना फफक कर रो उठी और रोती ही रही।

+ + +

रात का गहरा अधेरा गाँव पर छा चुका था। बन्ना अपने गोबर और सफेद मिट्टी से लीप पोत आँगन में बठी-बठी अपने फटे घाघरों को कारी लगा रही थी और धीरे धीरे अस्पष्ट स्वर में मीरा का एक भजन गुनगुना रही थी।

बन्ना! कारिन्दे न आकर आवाज दी तुझे ठाकुर सा ने बुलाया है।

बदना ने घाघरे का छोड कर कारिन्दे स पूछा—'आज उन्होंने ज्यादा तो नहीं पी।

'मेरी समझ में आज उन्होंने पी नही है। कोई दूसरा ही काम है।

'दूसरा काम अच्छा तू जा मैं आई।

बदना जब कमरे म घुसी तो ठाकुर अपनी चुटकी म अधर को पकडे चिन्ता मग्न से कुछ सोच रहा था। बन्ना ने धीमे से कहा—खम्मा मोइ बाप।

'बठो बदना।

बन्ना बठ गई।

यह हर रोज की रांडी रात क्या मचा रखी है तूने जानती नही हमें ? अभी उधेड कर रख देंगे! ठकुराइन सा आज कह रही थी कि उनक हुक्म का पालन नहीं करती क्यों नही करती ?

हे राम! सोलह आना झूठ है ठाकुर सा। न मालूम ठकुराइन सा स मरा अगले जन्म का बर है। सच बात ता यह है कि ठाकुर सा हाथ खाली ही नही होते। एक पर एक काम लगा ही रहता और ठकुराइन सा बीच-बीच म हुक्म फरमाती रहती हैं। ""बताइए मैं कसे उनके हुक्म का पालन करू। बन्ना ने जरा घुमाकर आज्ञा-उल्लघन की बात कह दी।

'जान गवाकर भी मुझे उनके हुक्म का पालन करना चाहिए।

'और पेट में आपका बच्चा जो है वह भी निगोडा मुझे सताता है।
आँखों को ठाकुर पर जमाती बदना दबे स्वर में बोली।

'मेरा बच्चा! जैसा हुआ तवा ठाकुर सा के पिपर गया हो उस तरह चिहुँक उठे।

होले बोलिए कोई सुन लेगा तो आपकी नाक कट जायगी कि बदना के पेट में आपका कुँवर है। व्यंग था बन्ना के स्वर में बहुत ही पैना व तीखा। तिलमिला उठे ठाकर—'निर्लज्ज कहीं की अबकी बार इस लफ्ज को जीभ पर लाई तो गला घोंट दूँगा।

मैं तो मरी हुई ही हूँ। बच्चा तो आपका हो उसकी ढिठाई चुप नहीं रह सकी।

बदना! हरामजादी छिनाल कहीं की। और ठाकुर सा बदना पर भूखे बाज की तरह झपट पड़े। लात घूँसों से मरम्मत करके जब थक गए तो म्यान में पड़ी जंग लगी तलवार को उठाकर जोर से उसके सिर पर दे मारा।

खून लाल खून बन्ना के सिर से टपक पड़ा। ठाकर ने जोर का धक्का देकर अपना द्वार बन्द किया और बड़-बड़ाए—'मेरा बच्चा मेरा कुँवर हरामजादी कहीं की।

दीये के धीम प्रकाश में बन्ना दीये के टूटे टुकड़े में अपने बहते खून को देख रही थी। देखते-देखते वह मुस्करा उठी। उसकी मुस्कराहट में असह्य वेदना थी। एक ऐसी मर्मान्तक पीड़ा थी जिसकी हृदय अनुभूति रोम रोम को कपा देती थी।

खटिया पर पड़ा हुआ उसका पागल पति नींद में बड़-बड़ा रहा था। बदना ने ध्यान से सुना—वह मीरा का गीत था। वही गीत जिसे वह घाघरे के टोवर लगाती हुई गुनगुना रही थी—'ए री मैं तो दरद दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय।

मीरा का यह पीड़ा भरा गीत उसे बेहद पसन्द था यह गीत उसके लिए ही रचा हो ऐसा वह प्रवसर सोचा करती थी।

और वह गाने लगी— एरी मैं तो दद दीवानी मेरा दर्द न जाने कोय।

गुलाम का दद कोई नहीं जान सका। स्वतन्त्रता के पुजारी भी नहीं। क्रांतिकारी ज्वालाए भी नहीं। कोई भी नही। दद वदना के सीने म बढ़ता ही गया और वह गीत को और तेज स्वर मे गाती रही—

'एरी मैं तो दद दीवानी मेरा
दद न जाने कोय।

सवेरा हुआ।

सूरज अब भी बादलो म छिपा था।

सारे डरे म हलचल मच गई कि वन्ना ने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली। उसके पेट में बच्चा भी था।

सब गुलाम इकट्ठ हो गए। सबने वदना के नील शरीर को छूकर उसकी मौत के बारे में तसल्ली पदा की। उस दिन सभी न पहली बार वन्ना के पागल पति की आँखों में आँसू देखे—शबनम स प्यारे आँसू।

तब बादलो से सूरज निकला उस दिन का नया सूरज साबरमती के सत के हृदय परिवर्तन की सम्पूण कलामा की रश्मियों के साथ कि हमारा देश रामराज्य है ?

—•—

खुदा और बेहोशी

नवाबों की थीं दो दो बेगमें। नवाब साहब तोता बसाने वाले बेगमें पसमारिन और कुंजड़न। नवाब का इश्क बहिश्त न बन कर दोजख ही बन गया। आखिर अन्जाम यही तो होना है।

रात हो गई थी। अंधियारा दानवी पक्षी के विशाल पंखों की तरह संसार पर फैलता जा रहा था। नवाब सिराजुद्दौला की गिरवी कोठी के कबूतर अपनी अपनी कबूतरनियों का लेकर स्वप्नों की दुनिया में खो गए थे। इधर कई दिन से एक चील ने भी छत की बिलकुल ऊपरी मंजिल की दीवार पर घोंसला बना कर एक बच्चे को जन्म दे दिया था। अभी नवाब साहब अपने घोड़े को दाना पानी देकर कई जिगरी दोस्तों के साथ हुक्का पी रहे थे।

बात नवाबो या अमीरी स शुरू हुई और चील के घामले पर आकर रुक गई। नवाब साहब ने हुक्के की नली को मु ह से निकाल कर इतमिनान से कहा हमारे अब्बाजान की बात जाने दीजिये। पर्सों को पानी की तरह बहाते थे। और आज । वे इतना कहकर रुके और उन्होंने व्ययाभरी दृष्टि अपने सभी मित्रा पर डाली आज हमें ताग चलाना पड़ता है और बड़ी होशियारी से इस घोंसल पर नजर रखनी पड़ती है।

ऐसी क्या बात है नवाब साहब ? एक ने तपाक से पूछा।

शायद तुम्हें इस बात का पता नहीं है कि चील अपने घोसले में पारस पत्थर लाती है । वह अपने बच्चे की आँखें पारस पत्थर से ही खोलती है।

पारस पत्थर।

'हाँ बरखुरदार उस पत्थर को लोहे से लगाओगे तो वह सोना हो जायेगा। परवरदिगार स इल्तिजा है कि एक बार यह पत्थर दस्तयाद वही सुनहरे दिन और वही रुपहली रातें ले आऊ ? ठहर कर नवाब साहब ने एक आह छोड़ी।

पर्दे क भीतर से नवाब साहब की पहली पत्नी ने पत्थर पर बतन की टकार की। नवाब साहब भीतर गय। उनकी बीबी फातिमा न कहा 'चाय बनाली है ले जाइये।

और खाना ?

वह आपकी छोटी वेगम बनायेगी। व्यग स कहा फातिमा ने।

वह कस बनायगी उसकी तबीयत अच्छी नहा है। तनिक झुभलाहट स कहा।

उसका तबीयत की तो बात ही मत पूछिये उस तो मसहरी म मच्छर काटते हैं। वह गम स्वर में बोलती गई सवेरे थोड़े का खाना मैं तयार कर आपकी चाय मैं बनाऊँ ""अजी कान खोलकर सुन लीजिए मैं उसकी लौंडी नहीं हूँ।

'आहिस्ता बोल बेगम आहिस्ते बोल कहीं सुरया बेगम सुन लेगी तो आफत आ जायगी।

तभी मजलिस में से शाह ने पुकारा अम्मा नवाब साहब क्या बात है चाय आएगी या नहीं?

'बस आया दोस्तो। कहकर ज्योंही नवाब साहब ने फातिमा की ओर देखा त्योंही फातिमा बिजली की तरह कड़कती हुई बोली, 'मैं किसी से नहीं डरती डरे मेरी जूती। वह नवाबजादी है तो मैं भी कोई खाकसार नहीं हूँ।'

चुप भी रह बेगम"। नवाब साहब झुंझलाये। तभी घायल सांपिन की तरह फुफकारती हुई सुरया आ पहुँची आप हटिए नवाब साहब मैं अभी इसे चुप किए देता हूँ।

नवाब साहब या खुदा कहकर बाहर की ओर दुम दबाकर भागे। बाहर निकलकर उन्होंने कोठी का दरवाजा और बन्द कर दिया। अपने मित्रों को चाय देकर व खुदा को याद करने लगे। उनके मित्र क्या कहते हैं वे जरा भी नहीं सुन रहे थे। उनका ध्यान भीतर हो रहे महाभारत पर था।

बात ठीक भी थी।

सुरया आकर एक सजग सैनिक मुद्रा में तनकर खड़ी हो गई।

वह नवाब साहब की दूसरी बीवी थी। देखने में अच्छी थी इसलिए नवाब साहब की दोस्ती आगे-तांगे में हो ही गई। वह हर रोज तांगे में अस्पताल जाया करती थी और नवाब साहब उसे अपने नवाबी की रोमांचकारी घटनाएँ सुनाया करते थे। और २ उन दोनों में इश्क हो गया और एक दिन नवाब साहब विवाह करके उस भटियारे की बेटी को बेगम बनाकर घर ले आए। घर में पहली बेगम वाले नवाब की नवाबजादी फातिमा उसे देखकर जमीन आसमान एक कर बैठी। हर रोज दोनों आपस में लड़ने लगीं।

नवाब साहब इस झगड़े से छुटकारा पाने के लिए इधर सवेरे ही अपने टट्टू घोड़े को कई हिदायतें देकर आजीविका के लिए निकल पड़ते थे लेकिन रात

को उनकी मित्र मडली फिर जमा हो जाती थी और चाय तथा हुक्के पर गडे मुर्दे उखाड़े जाते थे।

भीतर से थाली गिरने की जो भयानक झकार हुई उससे नवाब साहब की सारी मित्र-मडली हैरत में पड गई।

'मय्या नवाब साहब ! भीतर क्या जलजला आ रहा है ?

खुदा का शुक्र है जग शुरू होने के पहले ही खत्म हो गया। और फिर वे अपने मित्रो की ओर मुखातिब होकर बोले दो शादियाँ इन्सान की बरबादी हैं। मेरी समझ में नहीं आता अल्ताफ कि फातिमा दो घडी चन से क्यो नही बठती ? माना कि सुरया घसियारिन है। न उनका अच्छा खानदान है और न तहजीब। मैं यह भी मानता हूँ कि उसे बोलने तक की भी तमीज नहीं है पर फातिमा तो उस खानदान की है जिसका सितारा आसमान पर पूरी ताकत से चमकता था रोशन होता था। न खानदानी चुप है और न घासियारिन।

नवाब साहब की आँखों में व्यथा तर उठी।

मित्र मण्डली हमेशा की तरह चाय-पान करके चलने लगी। आखिर में वहाँ निगूढ शून्यता छा गई। नवाब साहब अकेले रह गए। चुप्पी गहरी चुप्पी था कभी-कभी घोडे की हिनहिनाहट भग कर देती थी।

सुरया बेगम ने खाना लाकर नवाब साहब को दिया। नवाब साहब आज बड़े दुखी थे अत वे सुरया से बात तक नही। सुरया भी नाक चढ़ाकर बठी रही।

बेगम।

'जी।

तुम दोनो मे किसी भी तरह सुलह नही हो सकती ?

'नही।

'क्या ?

दिलो-दिमाग नही मिलता।

क्या नही मिलता ?

फातिमा भड़क गई। उसने बुर्का पहना और बाहर चल पड़ी। जाते-जाते वह सुरैया को चुनौती दी कि वह उसको बरबाद करके ही दम लेगी।

सुरैया ने उसकी कुछ परवाह नहीं की।

\+ + +

रात को नवाब साहब हमेशा की अपेक्षा आज बड़ी देर से आए। सुरैया बैठी बैठी उनका इन्तजार कर रही थी।

'फातिमा कहाँ है! सारे काम से निवृत्त होकर नवाब साहब ने पूछा 'आज बड़ी खामोशी नजर आ रही है।

सुरैया किसी और ही विचार में तन्मय थी। हठात् बोली, 'नवाब साहब।

क्या है?

सुरैया चुप हो गई।

'अरे बोलती क्यों नहीं?

वह लज्जा से गड़ रही थी। बड़ी मुश्किल से उसने इतना ही कहा 'नया शाहजादा।

नवाब साहब ने उछल कर उसे चूम लिया।
प्रसन्नता आनंद और स्वर्णिम कल्पनाए।

\+ + +

फातिमा का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि वह उसका हमल गिरा कर ही दम लेगी।

अब वह नवाब साहब के बाहर जाते ही पीर फकीरों के पास जाने लगी। अजीब अजीब तावीज उसने पहन लिए। नित नया करिश्मा वह करने लगी। सुरैया ने नवाब साहब को सावधान कर दिया कि फातिमा बेगम उसके खानदान की बढ़ोतरी का खात्मा करने पर तुली हुई है। लाचार एक दिन नवाब साहब ने गुस्से के मारे फातिमा को गन्दी-गन्दी गालियाँ दी और यह ताड़ना भी दी कि अगर वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आई तो इस बार वह मार खाएगी।

नवाब साहब के जाते ही फातिमा ने सुरया को चुनौती दी मैं अपनी जान दे दूंगी खुद फना हो जाऊँगी पर तुझे फना करके ही रहूंगी।

उसी रात सुरया सीढ़ियों से गिर पड़ी। अधिक चोट न आने पर भी उसे विश्वास हो गया कि फातिमा का जादू अब उस पर असर करने लगा है।

बड़ी मुश्किल से उसे नींद आई।

सपना आया कि वह इतनी कमजोर होती जा रही है कि उसका चलना फिरना कठिन हो गया है। तब वह एक लड़के को जन्म देती है। लड़का बड़ा सा प्यारा है। नवाब साहब खुशी से विभोर हो उठते हैं। तभी फातिमा जोर का अट्टहास करती हुई उसके पास आती है। उसका चेहरा विकराल और कठोर है। उसके स्वर में नफरत का सागर है 'मुझे बच्चा दे मुझे बच्चा दे।' और वह उसके मासूम बच्चे को छीनकर ले जाती है। सुरया करुण आर्त नाद करती है पर फातिमा उसके बच्चे को लेकर जादूगरनी की तरह अदृश्य हो जाती है।

सपना खत्म हो जाता है।

सुरया चीख कर जाग पड़ी। उसका शरीर पसीने से लथपथ हो गया। वह पीले पत्ते की तरह कांप उठी। फिर वह रात भर सो नहीं सकी।

सवेरे से ही सुरया ने भयानक मौन धारण कर लिया। उसे हल्का सा उन्माद हो गया। बच्चे की मौत की कल्पना भय और पीड़ा से वह विचलित हो उठी। नवाब साहब ने कई बार उसे पूछा पर वह खामोश रही।

सांझ के नमाज का समय।

फातिमा छत पर बैठी-बैठी कबूतरों को दाना चुगा रही थी।

इन पांच छः कबूतरों के बारे में नवाब साहब का कहना था कि यह हमारे खानदान की शान हैं। नवाब लोग कबूतर रखते ही हैं।

सुरया के मस्तिष्क में विचारों का संघर्ष चल रहा था।

उसका बच्चा और फातिमा फातिमा और उसका बच्चा ?

भय आशंका और हाहाकार।

उसके मुख पर उभर रहा था। मार्मिक वेदना से भरे उसके तीखे शब्द मेरे अन्तर पर हथौड़े की चोट की भाँति लग रहे थे। मैं भी सोचने लगा कि तक लीफों की विकट परिस्थितियों से घिरा यह इन्सान कितना भावुक और कठोर हो गया है!

मैं झूठ नहीं बोल रहा बाबूजी! मेरा एक एक शब्द सच्चा और कठिनाइयों म पला हुआ है। आपकी ही तरह यहाँ बहुत से परदेशी आते हैं लेकिन यहाँ के निम्न वर्ग के व्यक्तियों की दशा देखकर उनकी जबान से भी एका एक निकल जाता है— प्रकृति की सुन्दरता का खजाना—यह शिमला—नरक से भी बदतर है।

हम दोनों निरन्तर चढ़ाव चढ़ रहे थे। थोड़ी दूर जाने भी न पाये थे कि मैंने कहा—'नीर! मैं यहाँ विश्राम करना चाहता हूँ।

बस बाबूजी! अभी से थक गये? उसकी विस्मय से भरी वाणी कह रही थी—'अभी होटल बहुत दूर है।

'अब चलना अपने बसका नहीं। यह अच्छी जगह है कुछ देर के लिये यहीं विश्राम कर लिया जाये"। ठहरो, मैं सहारा लगाता हूँ सामान अधिक जान पड़ता है।

'नहीं बाबूजी! आप सहारा क्या देंगे? सहारा लेना शुरू कर दूंगा तो यह सामान कोई और ही ले जायेगा।'

कितना व्यंग और कितनी विवशता है उसके शब्दों में— सहारा लेना शुरू कर दूँगा तो यह सामान कोई और ही ले जायेगा। सच ही तो कहता है— भाविक अभावों म पली उसकी अतृप्त जवानी जब उससे विमुख हो जायेगी और भूख से निबल पर श्रम के थपेड़ों में डगमगायेंगे तो वह सामान को लिए हुए गिर पड़ेगा—एक गोल वस्तु की तरह और उतार के अन्तिम छोर पर पहुँचकर निर्जीव होकर शान्त हो जायेगा।

क्या सोच रहे हैं बाबूजी?
कुछ भी नहीं सिगरेट पियोगे।
नहीं बीड़ी पीऊँगा।

'क्यों ?

बीडी अच्छी होती है।

अजीब हो सिगरेट से बीडी अच्छी होती है ? —मैं मुस्कराया।

'हाँ बाबूजी ! हमारी बिगडी आदत को बीडी का खारा धुआँ ही मार सकता है सिगरेट का मीठा चस्का नहीं। फिर कहीं सिगरेट का मीठा चस्का हमें अपना आदी बनाले तो ? यों ही गुजारा बडी तंगी में हो रहा है फिर लेने के देने पड जायेंगे।

मैंने बात का रुख बदलते हुए कहा— नीरू ! तुम्हारा विवाह हो चुका है ?

'हाँ। —नीरू ने उस कडाके की सर्दी मे अपने ललाट पर निकली हुई पसीने की बूंदों को पोंछते हुए कहा— शादी क्या ! बच्चे भी हैं—एक लडकी है एक लडका।

कैसे हैं ? —मेरा मानस भी एक अज्ञात अनुभूति महसूस कर रहा था।

'मेरे ही जैसे दुबले पतले, अब तो उनकी माँ भी दुबली-पतली हो गयी है बदसूरत सी आप नाराज न हों तो एक बात पूछूँ ? झिझकते हुए उसने कहा।

बडे शौक से।

'बच्चे होने पर स्त्रियों की खूबसूरती क्या चली जाती है ?

नहीं जाती बशर्ते कि उनको अच्छा खाना मिले। नहीं तो स्वास्थ्य के गिरने का खतरा रहता है। —मैं उसके पास चला गया। वह अपनी बोझिल गर्दन को मेरी ओर बडी कठिनाई से मोडते हुए बोला—'जब रानी के बच्चा हुआ तब उसे भरपेट रोटियाँ भी नहीं मिली थी। अच्छा खाना तो दूर रहा कभी कभी तो यहाँ दिन बडी गरीबी में गुजरते हैं—भूखा रहना पडता है हम दोनों को। आज ही देखिए ईश्वर की कसम अभी तक एक पैसा भी नहीं कमाया। दिन भर दौड धूप करता रहा पर सिवाय निराशा के कुछ भी हाथ

शाम को उसके घर वालों से मिलने के बाद दूसरे दिन पुलिस को कुछ दे दिलाकर नीरू से मिलने का प्रबन्ध किया।

नीरू....!'

आप यहाँ क्यों आये ?

क्या पकड़े गये यह जानने के लिए ?

आपको शायद नहीं मालूम उस दिन मैं आपकी पर्स से रुपये चुराकर.... "

मेरी पर्स से ? बीच में ही मैंने उससे प्रश्न किया—

'हाँ रुपये चुराकर मैं सीधा दर्जी को दुकान गया और अपने नंग बदन डोलते फिरते बच्चों के कपड़े बनवाकर सीधा घर चला गया। मेरी पत्नी को सन्देह तो हुआ पर मजबूरी में वह कुछ न बोली। मैंने जाते ही पूछा—'नन्दा और नीरा कहाँ हैं ?

'बाहर होंगे।

कहाँ किधर गए ?

'कहकर थोड़े ही जाते हैं !

लेकिन तुम्हें भी तो कुछ अक्ल रखनी चाहिए कि बच्चों के खेलने वाली सारी जगह पर अब एक बंगला बन रहा है आधी चट्टान में दरारें भी पड़ गई हैं। कहीं बच्चे खेलते-खेलते गिर गये तो मैं तुम्हें कच्चा ही चबा जाऊँगा। मेरा दिल न माना। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि दोनों मासूम बच्चे चट्टान के नज़दीक पहुँच चुके हैं। मैं दौड़ा।

'सिरदर्दों का तूफान लिए मैं भागा ही आ रहा था और सोच रहा था, धनवान ने उस चट्टान को भी तुड़वा दिया जहाँ मेरे लड़के खेला करते थे। आखिर हम गरीबों को कहीं भी चैन से नहीं बैठने देंगे। एकाएक मेरी नजर अपने बच्चों पर पड़ी। कुछ दूर पर कुछ लड़के इकट्ठे होकर गप-शप लगा रहे थे। मैं उतार में था। बड़े जोर से पुकारा—नीरा नन्दा नीरा नन्दा

किन्तु बच्चों की चहल-पहल में किसी ने कुछ भी न सुना। एकाएक बच्चों का झुण्ड भागा मैं बहुत जोर से चिल्लाया पर जो भय था वह सच होकर रहा। नीरा नन्दा चेतन किशोर चारों बच्चे चट्टान स गिर पड़े। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन सब बेकार मैं उन्हें बचा नहीं सका।

घायल बच्चो को लिए मैं और चेतन का बाप अस्पताल पहुँचे। बच्चो के क्षत विक्षत शरीर को देखकर डाक्टर भी तड़प उठा।

'डाक्टर'''—कहकर मैं रो पड़ा।

'क्या हुआ ?

'चट्टान से गिर पड़े। डाक्टर साहब। इन्हे बचाइये।

वह जानता था कि मेरा नन्दा मर चुका है लेकिन उसने मुझे नहा बताया। आखिर मैंने ही पूछा तो बड़ी कठिनाई से उसने कहा तुम्हारा लड़का मर गया और शायद लडकी भी बचेगी तो अपग होकर।

'मेरा कलेजा धक-सा रह गया। म रो उठा—मैंने उसको कितनी माफर्तें सह कर पाला था। उनके लिए ही तो मैंने आपकी चोरी की और वे बच्चे क्षण भर म गिर कर शीशे की तरह चकनाचूर हो गए। म पागल-सा हो गया। दो दिन तक मेरे घर में मातम छाया रहा। रानी अपने बच्चों के शोक में बीमार हो गई। तीसरे रोज मुझे विवश होकर मजदूरी के लिए जाना पड़ा क्योंकि डाक्टर का कहना था कि रानी के इन्जक्शन लगेंगे—उसके लिये रुपये चाहियें। एक साथ में इतने रुपए कहाँ से लाता? आप के पास तो मैं आ नहीं सकता था और माता जी तो कौनसा मुँह लेकर?

'स्टेशन पर मुझे जाते ही मजदूरी मिल गई। म सामान लिए चढ़ाई पर था उस दिन मेरे पैर कुछ डगमगा रहे थ। फिर भी पत्नी का मोह बल दे रहा था—आधा रास्ता तय कर चुकने के पश्चात् मेरी दृष्टि सामान म बधी एक छोटी पोटली पर गयी। मैंने उसको छूकर इस बात का अन्दाज लगाया कि इसमें पैसे और नोट हैं। फिर क्या था। बड़ी होशियारी स मैंने वह पोटली

शाम को उसके घर वालों से मिलने के बा
दिलावर नीर से मिलने का प्रबन्ध किया ।

नीर ...... !

आप यहाँ क्यों आये ?

क्यों पकड़े गये यह जानने के लिए ?

आपको शायद नहीं मालूम उ
चुरा कर ... ...

मेरी पस से ? बीच में ही मैंने उस

'हाँ रुपये चुराकर मैं सीधा दर्जी का
फिरते बच्चों के कपड़े बनवाकर सीधा
हुआ पर मजबूरी में वह कुछ न बोल
कहाँ हैं ?

'बाहर हांगे ।

कहाँ किधर गए ?

'कहकर थोड़े ही जाते हैं !

'लेकिन तुम्हें भी तो कुछ प
खास जगह पर अब एक बंगला
हैं । वहीं बच्चे खेलते-खेलते ि
दिल न माना । मुझे ऐसा म
ठीक पहुँच चुके हैं । मैं दौड़ा

'चिन्ताओं का तूफान ि
धनवान ने उस चट्टान को
जालिम हम गरीबों को प
अपने बच्चों पर पड़ी । क
थे । मैं उधार में था ।

नहीं ! आशका ने मेरे हृदय को झकझोर दिया। अनिष्ट के अशुभ चिह्न मेरे मानस पट पर अंकित होने लगे। रात को बरफ का तूफान आया था। बड़ी भयानक सर्दी पड़ी थी। मैं उससे कुछ भी कहे बगर बर्फीली सड़क पर चल पड़ा। घरों व सड़कों पर बफ की तहें जम गयी थीं। फिर भी मैं छोटे शिमले की ओर द्रुतगति से चला जा रहा था। चिन्ता में डूबा हुआ मैं सर्दी की सनसनाहट को महसूस नहीं कर रहा था—केवल चला जा रहा था—बर्फीली सड़क पर।

रात की रोटी में चिन्तित कुछ मजदूर ऐसे दुरूह और खतरनाक समय में भी बगलों पर जमी बफ की तहों को तोड़ रहे थे। लेकिन मैं रुका नहीं चला ही जा रहा था।

कुछ दूर दो महिलाएं और दो पुरुष बफ में गड़ी किसी वस्तु को कुरेद रहे थे। कुहरे की धुंधलाहट में मुझे पूरी तरह मालूम नहीं हो रहा था कि वे कौन हैं ? फिर भी जब व निकट के एक बगल में घुस तो सन्देह जाता रहा। होंगे तो स्वर्ग के देवता ही—मैं उस वस्तु का ध्यान में रखे हुए तेजी से छोटे शिमले की ओर चला जा रहा था। दुख तो मुझे इस बात का था कि कहीं पुलिस वालों ने मुझे धोखा तो नहीं दे दिया। रुपए तो ले ही चुके अब न छोड़ें तो उनकी मर्जी।

विचारों की उस धुन में मैं उस बगल से भी दूर निकल गया। पर उस चीज के मोह ने मुझे वापस लौटने के लिए विवश किया। मैंने लौटकर देखा तो मेरी आँखें फटी की फटी रह गयी। दिल में विद्रोह का तूफान-सा उमड़ा और आँखों में इन्सान की बेहयाई की तस्वीर नाच गई—यह है इन्सान। कोई ठीक कह रहा था यह वह स्वर्ग है जहाँ यदि गरीब मर जाये तो स्वर्ग के देवता उसकी लाश पर थूकेंगे भी नहीं बल्कि उसकी गलती हुई लाश पर अपने चमकीले जूतों की एक ठोकर मारकर आगे बढ़ जायेंगे।—और ये शब्द वहाँ की हवा में सन्नाटे से गूँजने लगे। मैंने बड़ी मुश्किल से जूतों की ठोकरें मारने

अपनी सलवार में छिपा लो। रास्ते भर तकदीर को सराहता रहा। सोच रहा था—जाते ही पत्नी का इलाज कराऊँगा लेकिन वह बाबू आपकी तरह का नहीं था! पुलिस का हवलदार था। सामान गिनकर उसने मुझसे कहा—'पोटली कहाँ है?

'मुझे पता नहीं। डरते हुए मैंने कहा।

तुझे पता नहीं? अभी पता पड़ जाता है! इतना कह उसने मेरे गाल पर तमाचा मारा। लेकिन मैं कुछ भी नहीं बोला। सोचा—पत्नी के लिए सहता हूँ परन्तु अन्त में उसने मुझे पकड़वा दिया। मैं उसके परों में गिरकर बोला—'हवलदार जी! मुझे छोड़ दीजिए मेरी पत्नी सख्त बीमार है उसका इलाज करवाना है सरकार! लेकिन उस निर्दयी को दया नहीं आयी। अब मैं क्या करूँ? रानी की हालत खराब है वह मर जायेगी तो। आप उसका इलाज करवा दीजिये।—वह रो उठा। मैंने उससे कहा—'मैं इलाज करवाऊँगा पर तुम यह तो बताओ—उस पोटली में कितने रुपये थे?'

'कुछ कागज और साढ़े चार आने के पैसों के सिवाय कुछ भी नहीं था।

वापस मैं चला आया। पुलिसवालों और हवालदारों की काफी खुशामद की तो उन्होंने कुछ लेकर नीरू को रात में छोड़ने को कहा। मैंने उनसे कहा कि सर्दी बहुत पड़ती है। कहीं वह ठिठुर न जाये! इस पर एक पुलिसवाला बोला—'बाबूजी! यह ठण्ड इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती। मुझे भी याद आये उसके शब्द 'हम तो पानी हैं, बाबूजी!

×　　　×　　　×

दूसरे दिन मैं लड़के-लड़के नीरू की पत्नी के पास पहुँचा ज्वर ने उसके शरीर को पीला कर दिया था। मैंने उसको सान्त्वना देते हुए कहा—'नीरू आ गया बहिन।

'नहीं भैया!

'नहीं ! आशंका ने मेरे हृदय को झकझोर दिया। अनिष्ट के अशुभ चिह्न मेरे मानस पट पर अंकित होने लगे। रात को बरफ का तूफान आया था। बड़ी भयानक सर्दी पड़ी थी। मैं उससे कुछ भी कहे बगैर बर्फीली सड़क पर चल पड़ा। घरों व सड़कों पर बर्फ की तहें जम गयी थीं। फिर भी मैं छोटे शिमले की ओर द्रुतगति से चला जा रहा था। चिन्ता में डूबा हुआ मैं सर्दी की सनसनाहट को महसूस नहीं कर रहा था—केवल चला जा रहा था—बर्फीली सड़क पर।

रात की रोटी में चिन्तित कुछ मजदूर ऐसे दुरूह और खतरनाक समय में भी बंगलों पर जमी बर्फ की तहों को तोड़ रहे थे। लेकिन मैं रुका नहीं चला ही जा रहा था।

कुछ दूर दो महिलाएं और दो पुरुष बर्फ में गड़ी किसी वस्तु को कुरेद रहे थे। कुहरे की धुंधलाहट में मुझे पूरी तरह मालूम नहीं हो रहा था कि वे कौन हैं ? फिर भी जब वे निकट के एक बंगले में घुस तो सन्देह जाता रहा। होंगे तो स्वर्ग के देवता ही—मैं उस वस्तु को ध्यान में रखे हुए तेजी से छोटे शिमले की ओर चला जा रहा था। दुख तो मुझे इस बात का था कि कहीं पुलिस वाला ने मुझे धोखा तो नहीं दे दिया। रुपए तो ले ही चुके, अब न छोड़ें तो उनकी मर्जी।

विचारों की उस धुन में मैं उस बंगले से भी दूर निकल गया। पर उस चीज के मोह ने मुझे वापस लौटने के लिए विवश किया। मैंने लौटकर देखा तो मेरी आँखें फटी की फटी रह गयीं। दिल में विग्रह [क्षा तूफान-सा उठा और आँखों में इन्सान की बड़ाई की तस्वीर नाच गई—यह है इन्सान। नीरू ठीक कह रहा था यह वह स्वर्ग है जहाँ यदि गरीब मर जाये तो स्वर्ग के देवता उसकी लाश पर थूकेंगे भी नहीं बल्कि उसकी सस्ती हुई लाश पर अपने चमकीले जूतों की एक ठोकर मारकर आगे चल जायेंगे।—और ये शब्द वहाँ की हवा में सन्नाटे से गूंजने लगे। मैंने बड़ी मुश्किल से जूतों की ठोकरें मारने

मारते बफ की तह को तोड़ा। और उस इन्सान को निकाल कर अपनी ओर घुमाया। मैं चीख पड़ा—नीर! नीर!! नीर!!! और इन्सान की इस भयंकर मौत को देखने का मेरा पहला ही मौका था। उसकी आँखें बाहर आ चुकी थीं नीचे का होंठ गल चुका था। शरीर का प्रत्येक अंग हाथ लगाने से गिर-सा रहा था बड़ी कठिनाई से मैं उसे अपने ओवर कोट में उठाकर लौटा।

लौटा क्या! चल पड़ा अपने हाथों में उस इन्सान की लाश जिसमें एक आग भरी चुनौती है।

—•—